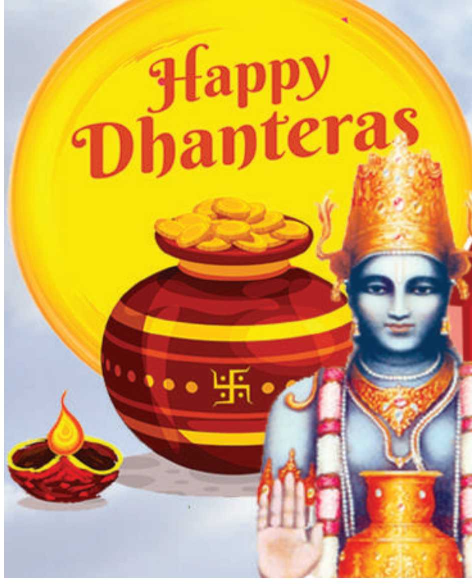

सांध्य दैनिक 4PM

जिद...सच की

www.4pm.co.in | www.facebook.com/4pmnewsnetwork | @Editor_Sanjay | YouTube @4pm NEWS NETWORK

• वर्षः 9 • अंकः 273 • पृष्ठः 8 • लखनऊ, शुक्रवार, 10 नवम्बर, 2023

मूल्य ₹ 3/-

जीतने वाले अलग चीजें नहीं करते, वो चीजों को अलग तरह से करते हैं।
– शिव खेड़ा

2024 में भाजपा के लिए आसान नहीं... 3 | बोल्ट-सैंटनर के शिकार बने श्रीलंकाई... 7

बीजेपी गरीबों को लूटती है, कांग्रेस गरीबों पर लुटाती है : राहुल गांधी

» विंध्य को साधने पहुंचे कांग्रेस सांसद, मोदी सरकार पर जमकर बरसे

» बोले- दो तरीके की होती है सरकार एक जेब में पैसा डालती, दूसरी जो निकालती है

» मोदी पर कसा तंज, कहा- हर दिन लाखों के सूट पहनते हैं पीएम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

भोपाल। पांच राज्यों में विधान सभा चुनाव को लेकर प्रचार अपने चरम पर पहुंचने लगा है। विपक्ष व सत्ता पक्ष में एक दूसरे पर आरोप-प्रत्यरारोप का दौर भी तेज हो गया है। कांग्रेस व बीजेपी के एक दूसरे पर हमलावर हो गई हैं। दानों प्रमुख दल जनता के बीच एक दूसरे के गुण-दोषों को जोरदार तरीके से बखान कर रहे हैं। उसी क्रम में राहुल गांधी आज सतना जिले के दौरे पर हैं। उन्होंने बीटीआई ग्राउंड में जनसभा को संबोधित करते हुए भाजपा सरकार और मोदी पर जमकर निशाना साधा।

राहुल ने सभा को संबोधित करते हुए कहा कि दो तरीके की सरकार होती है। एक गरीबों के जेब में पैसा डालती है। एक बड़े-बड़े कारोबारियों के जेब में पैसा डालती है। कांग्रेस ने मनरेगा दिया, भोजन का अधिकार दिया। भाजपा ने नोटबंदी, जीएसटी दी। किसानों के खिलाफ काले कानून लाए ये फर्क है। मध्यप्रदेश की जो नींव थी, उस नींव को भाजपा ने उखाड़कर फेंक दिया है। नींव किसान है, नींव मजदूर है, छोटे दुकानदार हैं, बेरोजगार युवा हैं इन सभी को बीते 15 साल में भाजपा ने खत्म कर दिया है। सभा को संबोधित करते हुए राहुल गांधी ने छत्तीसगढ़ की भूपेश सरकार की तारीफ की। राहुल गांधी ने कहा कि मध्यप्रदेश में किसान को फसल का सही दाम नहीं मिलता, कर्ज लेना पड़ता है। यहां 18 हजार किसानों ने आत्महत्या की है। आपका जीएसटी वाला पैसा अडानी जी की जेब में जाता है और बाहर जाकर खर्च हो जाता है। हम पैसा देते हैं तो किसान छोटी दुकान में जाकर सामान खरीदता है। जैसा ही किसान और मजदूर दुकान में जाकर सामान खरीदते हैं अर्थव्यवस्था चालू हो जाती है। मध्यप्रदेश में किसान, मजदूर, छोटे व्यापारी डरे हुए हैं। ये कहते हैं देश में बस एक ही जात है गरीब। इनके दिमाग से देश की जातियां इसलिए गायब हो गई, क्योंकि मैंने जाति जनगणना की बात की। जिस दिन मैंने ओबीसी, दलित, आदिवासी की आबादी की बात की, उस दिन से मोदी कहते हैं कि राहुल जी देश में कोई जात नहीं है। जात खत्म हो गई है। राहुल ने कहा कि एमपी में सरकार विधायक नहीं चलाते यहां के अफसर चलाते हैं।

53 अफसर लेते हैं बजट के सारे निर्णय, बस एक ओबीसी

राहुल ने कहा कि बजट के सारे निर्णय 53 अफसर लेते हैं। उन 53 में सिर्फ एक अफसर ओबीसी का है और मोदी जी कहते हैं कि एमपी में ओबीसी सरकार है। आपको झूठ बताया जा रहा है ये कैसी ओबीसी सरकार है। इसलिए मोदी कहते हैं कि देश में सिर्फ गरीब ही जात है। ओबीसी वर्ग की भागीदारी 0.3 फीसदी है। मोदी इस बात को छुपाना चाहते हैं। इसलिए वो किसी भी भाषण में जाति जनगणना की बात नहीं करते। उनका रिमोट अडानी के हाथ में है। एमपी में कांग्रेस की सरकार आते ही सबसे पहले जाति जनगणना हमारा कदम होगा। दिल्ली में सरकार आने पर नेशनल कास्ट सेंसस होगा। जाति जनगणना देश का एक्सरे है। इसके बाद हर आदिवासी, दलित, जनरल और ओबीसी वर्ग को पता चल जाएगा मेरी आबादी कितनी है।

राजस्थान का माहौल देख बौखलाए पीएमः गहलोत

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने उदयपुर में जनसभा की और कांग्रेस पर आतंकियों के समर्थक होने का संगीन आरोप मढ़ दिया। इस आरोप पर पलटवार करते हुए राजस्थान के मुखिया और कांग्रेस के कद्दावर नेता अशोक गहलोत सामने आए। उन्होंने मीडिया से मुखातिब होते हुए दो टूक कहा कि प्रधानमंत्री बहुत बड़ा पद होता है और उसका बिन तर्क का ये सब कहना शोभा नहीं देता। गहलोत ने पीएम के आरोपों का जवाब देते हुए कहा कि या तो प्रधानमंत्री को गुमराह किया गया है या ठीक से ब्रीफ नहीं किया गया है। इसी के साथ गहलोत ने कहा कि जिस तरह की भाषा का प्रधानमंत्री स्तर के व्यक्ति की तरफ से इस्तेमाल किया गया है वो पूरी तरह से आपत्तिजनक है, गहलोत का कहना है कि अगर पीएम को गलत ब्रीफ नहीं किया गया है तो शायद वो राजस्थान का माहौल देखकर या तो घबरा गए हैं या बौखला गए हैं. इसी लिए वो जानबूझकर ऐसा कर रहे हैं। राजस्थान के मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने प्रधानमंत्री मोदी को इस तरह की बयानबाजी से बचने की सलाह देते हुए कहा कि इस तरह की बातों से माहौल खराब होता है।

बीजेपी के नेताओं ने कराया कन्हैयालाल हत्याकांड

राजस्थान के चुनावी माहौल मे कन्हैयालाल हत्याकांड का जिक्र भी बार-बार आ रहा है, इसपर मुख्यमंत्री अशोक गहलोत ने कहा कि कन्हैयालाल का मर्डर कराने वाले बीजेपी के ही लोग थे। उन्होंने आगे इस हत्याकांड पर बोलते हुए कहा कि प्रधानमंत्री को इस बारे में शायद किसी ने सही से ब्रीफ नहीं किया होगा। गहलोत ने बताया कि कन्हैयालाल के हत्यारों को हत्याकांड के चार-पांच दिन पहले ही थाने ले जाया गया था, तब बीजेपी के नेताओं ने ही उन्हें छुड़ा लिया था। गहलोत ने आगे कहा कि हमने तो दो घंटे के अंदर ही अपराधियों को पकड़ लिया था फिर भी एनआईए ने उसी रात को हमसे केस ले लिया। हमने इसका विरोध नहीं किया क्योंकि हमें लगा कि कोई अंतरराष्ट्रीय साजिश होगी।

दिल्ली सरकार को सुप्रीम कोर्ट की करारी फटकार

'प्रदूषण पर हमें नतीजे चाहिए'

» कब तक हर साल हमारे दखल के बाद ही होगा काम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली-एनसीआर में बढ़ते प्रदूषण और दिल्ली के पड़ोसी राज्यों में जलने वाली पराली को लेकर जो याचिकाएं डाली गई हैं उस पर शुक्रवार को सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई की। इस पूरी सुनवाई में सुप्रीम कोर्ट ने सरकार को कड़ी फटकार लगाई है। सुप्रीम कोर्ट ने दिल्ली सरकार के उस बयान पर भी तीखी प्रतिक्रिया जाहिर की जिसमें कहा गया था कि ऑड-ईवन सुप्रीम कोर्ट के आदेश के बाद लागू होगा।

सुप्रीम कोर्ट ने पिछली सुनवाई के दौरान मुख्य सचिवों को बैठक कर पराली और प्रदूषण की समस्या पर काम करने के लिए कहा था। यही वजह रही कि आज यानी 10 नवंबर की सुनवाई शुरू होते ही अदालत ने सबसे पहले यही पूछा कि आप लोगों ने क्या किया?

दिल्ली में रातभर बारिश के बाद साफ हुई हवा

नई दिल्ली और आसपास के इलाकों में रात भर हुई बारिश से निवासियों को कुछ राहत मिली क्योंकि जहरीली धुंध साफ हो गई और हवा की गुणवत्ता में मामूली सुधार हुआ। मौसम एजेंसी को उम्मीद है कि रविवार को दिवाली से पहले प्रदूषण में और कमी आएगी। बिगड़ती वायु गुणवत्ता से निपटने के लिए राष्ट्रीय राजधानी में कृत्रिम बारिश कराने के लिए दिल्ली सरकार की भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) के साथ चल रही चर्चा के बीच यह बारिश हुई है। नई दिल्ली एक सप्ताह से गंभीर प्रदूषण से जूझ रही है, जिसमें हानिकारक कणों की सांद्रता विश्व स्वास्थ्य संगठन द्वारा अनुशंसित स्तर से 100 गुना अधिक देखी गई है। गुरुवार तक यह दुनिया का सबसे प्रदूषित शहर था। आईएमडी वैज्ञानिक ने कहा कि हम उम्मीद कर रहे थे कि दिल्ली में बादल छाए रहेंगे। मौसम और अधिक तीव्र हो गया। पश्चिमी विक्षोभ 70 डिग्री पूर्व और 28 डिग्री उत्तर में निचले स्तर पर प्रेरित चक्रवाती परिसंचरण के साथ बना हुआ है..।

मोदी सरकार को 'सुप्रीम' नोटिस

» कहा- राज्यपाल रवि पर आरोप बेहद चिंताजनक

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। राज्यपाल द्वारा विधेयक पास करने में देरी के खिलाफ तमिलनाडु सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर की हुई है। अब इस याचिका पर सुप्रीम कोर्ट ने केंद्र सरकार को नोटिस जारी किया है। इस नोटिस में सुप्रीम कोर्ट ने अटॉर्नी जनरल और सॉलिसिटर जनरल को मामले की सुनवाई में शामिल होने को कहा है।

सुप्रीम कोर्ट ने ये भी कहा कि तमिलनाडु सरकार ने याचिका में जो मुद्दा उठाया है, वह बेहद चिंताजनक है। बता दें कि तमिलनाडु सरकार ने सुप्रीम कोर्ट में याचिका दायर कर राज्यपाल पर राज्य विस द्वारा पारित विधेयकों को मंजूरी नहीं देने का आरोप लगाया। सरकार का कहना है कि इससे राज्य में संवैधानिक गतिरोध की स्थिति पैदा हो गई है। संवैधानिक कार्यों पर कार्रवाई ना करके राज्यपाल नागरिकों के जनादेश के साथ खिलवाड़ कर रहे।

सरकार के कारनामों से शर्मसार हो रहा यूपी

» सपा अध्यक्ष बोले- भाजपा सरकार ने साढ़े 6 सालों में किया जनहित की सभी व्यवस्थाओं को बर्बाद

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। सपा प्रमुख अखिलेश यादव भाजपा व सीएम योगी पर हमला बोलने का कोई मौका नहीं छोड़ते हैं। इस बीच सपा प्रमुख ने एक बार फिर प्रदेश की भाजपा सरकार पर जमकर निशाना साधा है। उन्होंने कहा कि सरकार के कारनामों से उत्तर प्रदेश शर्मसार हो रहा है। उन्होंने कहा कि हाथरस की बेटी के साथ बलात्कार और हत्या, लखीमपुर खीरी में किसानों की जीप चढ़ाकर हत्या, आईपीएस द्वारा वसूली और फिर महीनों फरार रहना, कानपुर में प्रशासन द्वारा गरीब की झोपड़ी पर बुल्डोजर चलाना और अग्निकाण्ड से मौत, बीएचयू में छात्रा के साथ अभद्रता ये सब घटनाएं उत्तर प्रदेश की भाजपा सरकार में हुई है। इन घटनाओं से प्रदेश आहत है।

अखिलेश यादव ने कहा कि सरकार चलाने वाले खुद अपने मुकदमें वापस ले रहे हैं। जनता के टैक्स के पैसों से भाजपा का प्रचार कर प्रदेश की छवि को धूमिल कर रहे हैं। प्रदेश की छवि शिक्षा, स्वास्थ्य, सड़क, बिजली में सुधार से बनती है, लेकिन भाजपा सरकार ने इन साढ़े 6 सालों में जनहित की सभी व्यवस्थाओं को बर्बाद करने का ही काम किया है। पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य में कानून व्यवस्था और स्वास्थ्य सेवाएं चौपट है। भाजपा सरकार ने समाज में नफरत फैलाई है। आपसी भेदभाव किया है। आज महंगाई, बेरोजगारी चरम पर है। किसान, नौजवान, महिलाएं दु:खी है। भाजपा ने जनता से झूठे वादे किए। धोखा दिया। भाजपा सरकार अहंकार में चूर है। भाजपा नेता और कार्यकर्ता अराजक है। गरीबों के साथ अन्याय, अत्याचार चरम पर है। किसी को न्याय नहीं मिल रहा है। लोगों को डेंगू बुखार एवं अन्य बीमारियों तक का इलाज नहीं मिल पा रहा है। लोग डेंगू बुखार से मर रहे हैं। सरकार दवा, इलाज नहीं दे पा रही है। बजट की लूट हो रही है। हर विभाग में भ्रष्टाचार व्याप्त है। जनता अब इसे और बर्दास्त करने वाली नहीं है। पन्ना में जनसभा को संबोधित करते हुए अखिलेश ने कहा कि मुझें मध्य प्रदेश की जनता पर भरोसा है। सपा जातीय जनगणना के पक्ष में है। वह जातीय जनगणना से सामाजिक न्याय की लड़ाई के नारे को तभी सार्थक मानती है जब 27 प्रतिशत आरक्षण पिछड़ों को मिले। सपा प्रमुख ने कहा कि ये लड़ाई हजारों वर्ष पुरानी है। अभी भी इस लड़ाई का कोई हल नहीं निकला है। उन्होंने कहा कि शिक्षा तथा स्वास्थ्य के क्षेत्र में उत्तर प्रदेश में समाजवादी सरकार में जो काम हुए उन्हें अभी तक मध्य प्रदेश में लागू नहीं किया जा सका।

अखिलेश ने पत्रकार को बताया भाजपा का एजेंट

विधानसभा चुनाव के चलते सपा प्रमुख अखिलेश यादव इन दिनों मध्य प्रदेश के चक्कर लगा रहा हैं। इसी क्रम में सपा मुखिया एमपी में थे, इस दौरान एक पत्रकार के सवाल पर वो भड़क गए और उन्होंने उस पत्रकार को नसीहत दे डाली। एमपी के पन्ना में एक पत्रकार ने अखिलेश से सवाल किया कि योगी आदित्यनाथ ने कहा कि आप टोंटी चोर हैं। इस पर जवाब देते हुए अखिलेश ने कहा कि तुम पत्रकार नहीं हो। तुम बीजेपी के एजेंट हो। सपा प्रमुख द्वारा पत्रकार का नाम पूछने पर पत्रकार ने कहा कि मेरा नाम नूर काजी है। इस पर अखिलेश ने कहा कि मुस्लिम हो आप। ऐसी भाषा होती है मुसलमानों की क्या? तुम तो बिके हुए हो। तुम आगे से मत आना यहां। पता नहीं तुम पत्रकार हो भी या नहीं। अखिलेश ने बताया कि जब मैंने सीएम आवास छोड़ा था तो बीजेपी ने इसे धुलवाया था।

भाजपा सरकार ने समाज में फैलाई नफरत

नीतीश को मिला डिंपल का साथ

समाजवादी पार्टी की सांसद डिंपल यादव ने बिहार के मुख्यमंत्री नीतीश कुमार के बयान के समर्थन में उतर आई हैं। उन्होंने कहा है कि यौन शिक्षा पर खुलकर बात होनी चाहिए। डिंपल ने मीडिया के सवालों का जवाब देते हुए कहा कि नीतीश कुमार कहना चाह रहे थे कि यौन शिक्षा के मामले में आमतौर पर लोग खुलकर नहीं बोलते हैं। उन्होंने अपने तरीके से अपनी बात को रखा है। मेरा भी यही कहना है कि यौन शिक्षा देनी चाहिए और इस पर खुलकर बात होनी चाहिए। गर्भनिरोधक का उपयोग होना चाहिए, क्योंकि हमारी जो जनसंख्या है भारत की वो लगातार बढ़ती जा रही है। इस पर ध्यान देना बहुत जरूरी है। बता दें कि सीएम नीतीश कुमार के प्रजनन दर को लेकर विधानसभा में दिए गए बयान पर बवाल मचा हुआ है। इस बीच तेजस्वी यादव के बाद सीएम को सपा सांसद डिंपल यादव का समर्थन मिला है।

अब्बास हमारे विधायक: राजभर

» बोले- लोकसभा चुनाव में मिलकर करेंगे काम

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मऊ। सुहेलदेव भारतीय समाज पार्टी के अध्यक्ष ओमप्रकाश राजभर अक्सर अपने बयानों को लेकर चर्चा में रहते हैं। इस बीच उन्होंने एक और बड़ा बयान देकर उत्तर प्रदेश में सियासी हलचल तेज कर दी है। दरअसल, ओपी राजभर मऊ जिले में एक निजी कार्यक्रम में पहुंचे। यहां पर उन्होंने मीडिया के सवालों का जवाब देते हुए कहा कि अब्बास अंसारी हमारी पार्टी के विधायक हैं और लोकसभा चुनाव में हमारे साथ आकर चुनाव जितवाने का काम करेंगे। इसी दौरान उन्होंने विपक्ष पर भी जमकर निशाना साधा।

जाहिर है कि अगले साल पूरे देश में लोकसभा चुनाव होने वाले हैं। जिसे जीतने के लिए सभी राजनीतिक दल तैयारियां कर रहे हैं। इसी बीच ओपी राजभर भी तैयारियों में जुटे हैं। इस बीच नवंबर को राजभर अपने मऊ दौरे पर पहुंचे, जहां पर कुछ मीडिया पत्रकारों से बातचीत करते हुए उन्होंने कहा कि अब्बास अंसारी हमारी पार्टी के विधायक हैं और लोकसभा चुनाव में हमारे साथ आकर चुनाव जितवाने का काम करेंगे। इसी दौरान मुख्तार अंसारी के छोटे बेटे उमर अंसारी की जमानत पर उन्होंने कहा कि यह कोर्ट का काम है, कोर्ट अपना काम कर रही है।

कांग्रेस सिर्फ झूठे वादे करके बढ़ती है आगे : वसुंधरा

» पूर्व सीएम बोलीं- राजस्थान में फिर खिलने वाला है कमल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

जयपुर/झालावाड़। राजस्थान की पूर्व मुख्यमंत्री वसुंधरा राजे ने कांग्रेस पर जमकर निशाना साधा है। पूर्व सीएम ने कहा कि कांग्रेस जनता को झूठे सपने दिखाकर सत्ता में बनी रहना चाहती है। लेकिन यह पब्लिक है जो जानती है कि ये वो ही कांग्रेस है, जिसने पिछले चुनाव में किसानों का दस दिन में कर्जा माफ करने का वादा किया था, जो पांच बरस में भी पूरा नहीं हुआ।

वादा खिलाफी के कारण सैकड़ों किसान आत्महत्या कर चुके हैं। हमने वादा नहीं किया फिर भी किसानों की स्थिति को देखकर हमारी सरकार ने 27.15 लाख किसानों का साज हजार, 700 करोड़ का कर्जा माफ किया। पूर्व सीएम राजे ने कहा कि कांग्रेस ने पूरे पांच साल झालावाड़ की उपेक्षा की। कांग्रेस और हम में यही फर्क है कि वो विकास में राजनीति करती है, जबकि हम राजनीति में विकास। पूर्व सीएम ने कहा कि राजस्थान के अच्छे दिन आने वाले हैं। कुछ ही दिनों की बात है। राजस्थान का नव निर्माण होगा। फिर से कमल खिलेगा।

अब राजस्थान में कांग्रेस से खफा रालोद

लखनऊ। देश में राजनैतिक पार्टियां लोकसभा चुनाव 2024 की तैयारियों में जुट गई हैं। वहीं इस चुनाव के लिए एकजुट हुए विपक्षी दलों में विधानसभा चुनावों ने टकराव बढ़ा दिया है। एमपी में सीट बंटवारे पर सपा-कांग्रेस की कलह तो जगजाहिर है। वहीं अब राजस्थान में भी सीट शेयरिंग में कांग्रेस ने रालोद को भी झटका दिया है। जानकारी के मुताबिक राजस्थान कांग्रेस नेताओं के रवैये और मसले पर राष्टीय नेताओं की उपेक्षाओं से रालोद मुखिया जयंत चौधरी के मन में खटास पैदा हो गई है। वह अभी 'वेट एंड वॉच' के फार्मूले पर काम कर रहे हैं। फिलहाल रालोद पदाधिकारी यूपी में सपा से भाईचारा को और धार देने पर काम करेंगे। रालोद ने पिछले विधानसभा चुनाव में दो सीटों पर चुनाव लड़ा था। एक सीट पर उसने जीत हासिल कर गहलोत सरकार में भी भागेदारी निभाई। इस विधानसभा चुनाव में रालोद ने राजस्थान की भरतपुर, अनूपगढ़, मालपुरा, उदयपुरबाटी और सरदारशहर सीट की कांग्रेस से मांग की। लेकिन, कांग्रेस ने उसके लिए सिर्फ भरतपुर सीट ही छोड़ी। इसको लेकर कांग्रेस से रालोद ने मसला भी उठाया। सूत्रों के मुताबिक मध्यप्रदेश की तरह राजस्थान के कांग्रेस नेताओं का भी अड़ियल रवैया रहा। वह एक सीट से ज्यादा रालोद को देने के लिए रजामंद नहीं हुए। वहीं पार्टी के राष्ट्रीय नेतृत्व ने भी इस मसले पर दिलचस्पी नहीं दिखाई।

महिलाओं से निर्धारित होता है राष्ट्र का मूल्य

» सीजेआई बोले- महिलाओं को महत्व देना पुरुषों का मुद्दा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। मुख्य न्यायाधीश डीवाई चंद्रचूड़ ने महिलाओं की स्थिति और राष्ट्र में उनकी महत्वा पर बात करते हुए कहा कि किसी राष्ट्र का मूल्य उसकी महिलाओं की स्थिति से निर्धारित होता है और महिलाओं को महत्व देना मुख्य रूप से पुरुषों का मामला है। उन्होंने यह भी कहा कि सामाजिक कल्याण उपायों का लाभ वास्तव में नागरिकों तक पहुंचे, यह सुनिश्चित करने के लिए दूरदेशी नीतियों और निर्णयों की आवश्यकता है।

राष्ट्रीय महिला आयोग और राष्ट्रीय विधिक सेवा प्राधिकरण द्वारा आयोजित एक कार्यक्रम में जस्टिस चंद्रचूड़ ने कहा कि भारत में उत्कृष्ट कानून हैं, जिन्हें अच्छे विश्वास के साथ लागू किया गया है। लेकिन विशाल एवं विविधतापूर्ण देश में वास्तविक चुनौती लोकतंत्र और संविधान की परिवर्तनकारी क्षमता का उपयोग करके उन्हें धरातल पर लोगों के अधिकारों की वास्तविक प्राप्ति में परिवर्तित करना है। उन्होंने कहा कि एक परिवार का मूल्य महिलाओं की स्थिति से निर्धारित होता है। इसलिए भविष्य में आगे बढ़ने के दौरान एक राष्ट्र के रूप में हमारा मूल्य काफी हद तक इस बात पर निर्भर करेगा कि हम महिलाओं को कितना महत्व देते हैं और महिलाओं को महत्व देना महिलाओं का मुद्दा नहीं है। यह मुख्य रूप से पुरुषों का भी मुद्दा है। चीफ जस्टिस ने कहा कि ये ऐसे मामले हैं जो सुप्रीम कोर्ट के दैनिक कार्य का हिस्सा हैं और यह वास्तव में स्पष्ट संकेत देते हैं कि वंचित चाहे वह लिंग के रूप में हो या जाति के रूप में सभी को अक्सर अधिकारों को प्राप्त करने में वास्तविक बाधाओं का सामना करना पड़ता है। जस्टिस चंद्रचूड़ ने विभिन्न प्रकार की ऐसी शिकायतों का उल्लेख किया जिन्हें लेकर नागरिक अंतिम उपाय के रूप में शीर्ष अदालत का दरवाजा खटखटाते हैं। कार्यक्रम के दौरान एनसीडब्ल्यू मोबाइल एप्लिकेशन 'हर लीगल गाइड', ब्लॉक स्तर पर महिलाओं के लिए कानूनी जागरूकता कार्यक्रम और नालसा के उन्नत राष्ट्रीय टोल फ्री हेल्पलाइन नंबर 15,100 लांच किए गए।

न्याय वास्तव में एक सेवा मानी जाती है

जस्टिस चंद्रचूड़ ने कहा कि एनसीडब्ल्यू और नालसा द्वारा किए जा रहे काम का वास्तविक मूल्य न्याय को लोगों के दरवाजे तक पहुंचाना है। दूसरे शब्दों में, न्याय सिर्फ राज्य का संप्रभु कार्य नहीं रह गया है, बल्कि न्याय वास्तव में एक सेवा मानी जाती है जो हम नागरिकों को प्रदान करते हैं। उन्होंने कहा कि प्रौद्योगिकी लोगों के अधिकारों के लिए असीमित संभावनाओं, नई सुविधाओं और संभावनाओं को साकार करने के द्वार खोल रही है। सुप्रीम कोर्ट के समक्ष आने वाले मामलों का जिक्र करते हुए प्रधान न्यायाधीश ने कहा कि ऐसे मामले भी हैं जहां विचाराधीन कैदियों का कहना है कि जमानत मिलने के बावजूद उन्हें कई हफ्तों तक जेल से रिहा नहीं किया गया।

2024 में भाजपा के लिए आसान नहीं यूपी की राह

विधानसभा चुनाव में मिली जीत के बाद भी कम नहीं हो रहीं चिंताएं

» पश्चिम को साधने में जुटी बीजेपी

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों के चलते देश में इस समय सियासी पारा काफी हाई है। इन विधानसभा चुनावों को 2024 के लोकसभा चुनावों का सेमीफाइनल माना जा रहा है। इसलिए चाहें कांग्रेस हो या भाजपा सभी राजनीतिक दल इन राज्यों के चुनावों में काफी मेहनत कर रहे हैं और अपनी पूरी ताकत झोंक रहे हैं। भाजपा और कांग्रेस के लिए तो इन चुनावों के परिणाम काफी मायने रखते हैं। क्योंकि इन चुनाव के परिणामों से ही 2024 के लिए भी माहौल बनना शुरू होगा। ऐसे में ये दोनों दल इन राज्यों में काफी मेहनत कर रहे हैं। लेकिन वो कहते हैं न कि 'दिल्ली का रास्ता यूपी से ही होकर गुजरता है'। यानी कि अगर दिल्ली में देश की सत्ता पर राज करना है तो उत्तर प्रदेश में आपको बेहतर करना ही होगा।

ये ही वजह है कि इन पांच राज्यों के विधानसभा चुनावों से इतर 2024 में उत्तर प्रदेश में बेहतर प्रदर्शन करना हर किसी के लिए एक बड़ी चुनौती बना हुआ है। लेकिन ये चुनौती सिर्फ सपा, बसपा और कांग्रेस के सामने ही नहीं बल्कि देश के सत्ताधारी दल भाजपा के सामने भी है। भले ही भाजपा के पास इस समय यूपी की 80 लोकसभा सीटों में से 62 पर कब्जा हो। लेकिन फिर भी 24 में भाजपा के लिए भी यूपी की राह आसान नहीं है। इसकी कई वजह हैं। क्योंकि इस बार हालात 2019 से पूरी तरह से अलग हैं। 2024 में न तो 2019 वाला मोदी मैजिक दिखाई दे रहा है और न ही इस बार हिंदुत्व का कार्ड भाजपा के अब तक उतना काम आया है। हालांकि, 2024 के चुनाव से पहले राममंदिर का निर्माण कार्य पूरा कराकर भाजपा एक बार फिर भगवान राम के नाम पर यूपी के लोगों को साधने का प्रयास करेगी। लेकिन फिर भी इस बार भाजपा के लिए यूपी की राह काफी मुश्किल होने वाली है। तो वहीं दूसरी ओर इस बार भाजपा के लिए यूपी 2019 से भी ज्यादा जरूरी बन गया है। क्योंकि इस बार यूपी के बाहर भी भाजपा की सीटों में कमी होना पक्का तय है। ऐसे में भाजपा उत्तर प्रदेश में अपनी सीटों पर कटौती कतई बर्दाश्त नहीं कर पाएगी। क्योंकि अगर यूपी में भी भाजपा को झटका लगता है तो जाहिर है कि मोदी साहेब का तीसरी बार सत्ता की कुर्सी पर बैठने का सपना सपना ही रह जाएगा। वैसे भी इस बार सत्ता का स्वप्न मोदी और भाजपा के लिए हर बीतते दिन के साथ धुंधला ही होता जा रहा है। ऐसे में इस बार यूपी भाजपा के लिए और भी जरूरी बन गया है।

लेकिन जितना ही यूपी जरूरी बन रहा है। उतनी ही मुश्किलें भी भाजपा के सामने उत्तर प्रदेश में खड़ी हो रही हैं। ये मुश्किलें अगर एक ओर समाजवादी पार्टी पीडीए फॉर्मूले के जरिए खड़ी कर रही है। तो वहीं दूसरी ओर राहुल गांधी की बढ़ती लोकप्रियता और कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष की बढ़ती आक्रामक सक्रियता भी भाजपा के लिए चुनौतियां खड़ी कर रही है। वहीं इस बार मायावती भी एक नए प्लान के साथ 24 के रण में उतरने को तैयार हैं। जाहिर है कि इन सभी का मुकाबला भाजपा से ही होना है। वहीं अगर इंडिया गठबंधन में सबकुछ ठीक रहा और विपक्षी दल एकजुट होकर 2024 के चुनाव में यूपी में उतरे। तब तो साफ है कि भाजपा के लिए यूपी में खतरे की घंटी बजना तय है। ऐसे में यूपी में भाजपा सबसे मजबूत नजर आने के बाद भी काफी परेशान दिखाई दे रही है।

पश्चिमी यूपी का किला भाजपा के लिए बना चुनौती

वहीं भाजपा की परेशानी की एक वजह ये भी है कि प्रदेश में पूर्वांचल में तो योगी ने भाजपा को मजबूत बनाया है। लेकिन पश्चिमी उत्तर प्रदेश में भाजपा के लिए चुनौतियां कम होने का नाम नहीं ले रही हैं। और 2014 और 19 में अच्छा करने के बाद भी पश्चिमी यूपी को लेकर भाजपा खासा परेशान दिखाई दे रही है। यही वजह है कि पिछले साल यूपी में हुए विधानसभा चुनाव से ठीक पहले गृहमंत्री अमित शाह ने राष्ट्रीय लोकदल अध्यक्ष जयंत चौधरी को साधने की तमाम कोशिशें की थीं। जाट बेल्ट में मतदान से दो हफ्ते पहले तक शाह जयंत चौधरी को संदेश भेजे जाते रहे। लेकिन भाजपा के कथित चाणक्य की दाल यहां गलती नहीं दिखाई दी। और यह प्रयास पूरी तरह से विफल ही रहा। इस कदम से ऐसी पार्टी को लुभाने की भाजपा की उत्सुकता दिखाई दी जो हमेशा उसकी विचारधारा और प्रस्तावों का विरोध करती रही है। ऐसी पार्टी को अपने साथ लाने की कोशिश हुई जो मजबूती से यूपी की मुख्य विपक्षी समाजवादी पार्टी के साथ खड़ी रही। भाजपा की इस लाचारी और इस प्रयास से उस समय ही ये साबित हो गया कि पश्चिमी यूपी भाजपा के लिए चुनौती बना हुआ है। हालांकि, ये बात अलग है कि विधानसभा चुनावों में भाजपा को सफलता मिली और एक बार फिर वो सत्ता पर काबिज हुई। लेकिन अब जब अगले 4 से 5 महीनों में लोकसभा चुनावों का बिगुल बजना है। तो भाजपा के लिए पश्चिमी यूपी अभी भी प्रदेश में उसकी सबसे कमजोर कड़ी ही बना आ है। यही वजह है कि 2024 में होने वाले लोकसभा चुनाव से पहले भाजपा की निगाहें एक बार फिर से जयंत चौधरी पर टिकी हैं। भाजपा जयंत के साथ ही उनके जाट वोटों को लुभाने में लगी है। आखिर भाजपा को क्यों अब भी जयंत की जरूरत महसूस हो रही है। क्या जयंत का पश्चिमी यूपी में मजबूत आधार बीजेपी को मजबूर कर रहा है। इन सवालों का जवाब आप खुद ही तलाश सकते हैं। हालांकि, जयंत चौधरी कई मौकों पर ये साफ कर चुके हैं कि वो भाजपा में जाने वाले नहीं हैं। वहीं हाल ही में कांग्रेस और समाजवादी पार्टी के बीच जारी तनातनी में भी उन्होंने सपा प्रमुख का समर्थन किया और कांग्रेस से बड़ा दिल दिखाने की बात कही। यानी साफ है कि जयंत का स्टैंड क्लीयर है और वो सपा के साथ कंधे से कंधा मिलकर चलने को तैयार हैं। लेकिन फिर भी भाजपा अपने प्रयास में लगी हुई है। जो ये दर्शाता है कि भाजपा को यूपी वेस्ट में एक डर सता रहा है।

वरुण गांधी बने हुए हैं अनसुलझी पहेली

एक ओर जहां विपक्षी दल भाजपा के लिए चुनौती बने हुए हैं। तो वहीं दूसरी ओर प्रदेश में भाजपा के अंदर भी पार्टी के लिए माहौल सही नहीं दिखाई दे रहा है। भाजपा के पीलीभीत से सांसद वरुण गांधी पिछले कई दिनों से चर्चा में बने हुए हैं। उनकी हालिया टिप्पणियों की कई तरह से व्याख्या की जा रही है। लोग इसे भाजपा से मोहभंग से जोड़ रहे हैं। क्योंकि भाजपा भी इसका सही जवाब अभी नहीं दे पा रही है कि वरुण के दिमाग में क्या चल रहा है। और क्या पार्टी उन्हें या मेनका गांधी को 24 में टिकट देगी या नहीं। या फिर कहां से देगी। ऐसे में वरुण गांधी भाजपा के लिए भी एक पहेली बने हुए हैं। हां, इतना जरूर साफ है कि वरुण भाजपा पर ही लगातार हमलावर हैं। और वो कई मौकों पर प्रदेश की बीजेपी सरकार पर ही उंगली उठा चुके हैं। वहीं दूसरी ओर उनके सपा और कांग्रेस दोनों में जाने की चर्चाएं भी समय–समय पर जोर पकड़ती रहती हैं। वहीं वरुण के अलावा कहने वाले तो ये भी कहते हैं कि तलवारें योगी और मोदी के बीच भी खिंची हुई हैं।

2019 में भी यूपी वेस्ट में लगा था झटका

वहीं पश्चिमी यूपी इसलिए भी भाजपा के लिए चिंता का विषय बना हुआ है क्योंकि सिर्फ विधानसभा चुनाव ही नहीं बल्कि पिछले लोकसभा चुनाव में भी भाजपा को सबसे बड़ा नुकसान पश्चिमी यूपी में ही हुआ था। 2019 के लोकसभा चुनावों में भाजपा को जिन 16 सीटों पर हार मिली थी। उनमें सात पश्चिमी यूपी की ही थीं। इसमें सहारनपुर भी शामिल है। मुरादाबाद मंडल में भाजपा का प्रदर्शन उम्मीद के मुताबिक नहीं रहा। लोकसभा के बाद यह सिलसिला 2022 के विधानसभा चुनाव में भी जारी रहा। इसीलिए पश्चिमी यूपी को साधने के लिए भाजपा ने विधानसभा चुनाव के बाद से ही प्रयास करने शुरू कर दिए। भाजपा ने विधानसभा चुनाव के ठीक बाद अगस्त 2022 में सबसे पहले आरएसएस के धर्मपाल सिंह को राज्य महासचिव (संगठन) नियुक्त किया। धर्मपाल पश्चिम यूपी के बिजनौर से ओबीसी नेता हैं। कुछ दिनों बाद पश्चिमी यूपी के ही भूपेन्द्र चौधरी को यूपी का प्रदेश अध्यक्ष बना दिया गया। भूपेंद्र सिंह पश्चिम यूपी के मुरादाबाद से आते हैं और उत्तर प्रदेश के पहले जाट हैं। जिन्हें अध्यक्ष बनाया गया है। भाजपा के इस कदम ने सबसे अधिक आबादी वाले राज्य यूपी में उस प्रथा पर ब्रेक लगा दिया है। जिसने अभी तक लोकसभा चुनाव ब्राह्मण प्रमुख के साथ लड़ा है। 2009, 2014, 2019 के चुनावों के दौरान भाजपा की कमान ब्राह्मण नेता के हाथ थी। अब पश्चिमी यूपी से आने वाले प्रदेश संगठन के दो बड़े नेताओं के कारण यह साफ है कि पार्टी का फोकस क्या है। पार्टी में कोई भी फैसला सभी समीकरण देखने के बाद किए जाते हैं। फिलहाल अब ये तो सिर्फ समीकरण हैं। लेकिन इन सभी बातों से ये तो साफ है कि प्रदेश में लगातार दो बार सरकार बनाने के बाद भी 2024 में भाजपा के लिए यूपी में चिंताएं अपार हैं। और इन चुनौतियों से पार पाना भी भाजपा के लिए इतना आसान दिखाई नहीं दे रहा है।

मायावती के कदम पर भी निगाह

2022 के विधानसभा चुनाव में स्पष्ट बहुमत हासिल करने और कई दशक बाद लगातार दूसरा चुनाव जीतने वाली पार्टी बनने के बाद भी भाजपा के रणनीतिकारों के चेहरे पर पश्चिमी यूपी को लेकर तनाव साफ झलकता है। इसका एक कारण ये भी है कि पश्चिमी यूपी के जाट बेल्ट में सपा और रालोद गठबधन ने बड़ा प्रभाव डाला है। यहां मुरादाबाद मंडल की 27 में से लगभग 17 सीटों पर जीत हासिल की थी। जबकि यहां भाजपा केवल दस सीटें ही जीत सकी थी। तो वहीं सहारनपुर क्षेत्र की 16 में से नौ सीटों पर सपा-रालोद ने जीत हासिल की थी। इससे इतर अगर ताजा घटनाक्रमों को देखें तो बसपा प्रमुख मायावती विपक्षी गठबंधन में शामिल नहीं हुई हैं। मायावती के कांग्रेस के नेतृत्व वाले विपक्षी गठबंधन के करीब जाने की चर्चा ने तब जोर पकड़ लिया था जब यूपी कांग्रेस प्रमुख दलित चेहरा बृजलाल खाबरी और मायावती के करीबी रहे नसीमुद्दीन सिद्दीकी को पद से हटा दिया गया था। इस बीच मायावती ने सहारनपुर के प्रभावशाली मुस्लिम नेता इमरान मसूद को कांग्रेस से नजदीकियों के चलते ही बर्खास्त कर दिया था। हालांकि, बाद में इमरान मसूद गए भी कांग्रेस में ही।

कांग्रेस में जाते ही इमरान ने अब बसपा पर हमला करते हुए 2024 का लोकसभा चुनाव लड़ने के इरादे भी जता दिए हैं। वहीं भाजपा जयंत को इसलिए भी लुभाने का प्रयास कर रही है। क्योंकि जयंत चौधरी को भीम आर्मी के संस्थापक और आजाद समाज पार्टी के प्रमुख चंद्रशेखर आजाद का भी करीबी माना जाता है। चंद्रशेखर भी दलितों की उसी जाटव जाति के हैं जिस जाति से मायावती हैं। चंद्रशेखर भी पश्चिमी यूपी के सहारनपुर से हैं और उन्हें भी भाजपा लुभाने की कोशिश कर रही है। आजाद ने 2022 में पश्चिमी यूपी में एसपी-आरएलडी गठबंधन के उम्मीदवारों के लिए प्रचार किया था। और संभव है कि 24 में भी वो सपा और आरएलडी के ही साथ रहेंगे।

घोसी उपचुनाव में मिली हार ने पूर्वी यूपी में बढ़ाई परेशानी

भाजपा रालोद को अपने साथ लाने के लिए इसीलिए उत्सुक है। क्योंकि पूर्वी यूपी के विपरीत भाजपा को पश्चिमी यूपी में साझेदार नहीं मिल रहे हैं। दरअसल, भाजपा के लिए पश्चिमी यूपी में चुनौतियां पूर्वी यूपी के बिल्कुल विपरीत हैं। पूर्वी यूपी में भाजपा को लगा था कि दारा सिंह चौहान की वापसी से उसे भले मजबूती मिलेगी। लेकिन ऐसा हुआ नहीं। क्योंकि दारा सिंह चौहान भाजपा में आने के बाद अपनी सीट तक नहीं बचा सके। और सपा ने उन्हें एक करारी शिकस्त दी। लेकिन दारा सिंह किसी समय भाजपा ओबीसी विंग के प्रमुख रहे हैं। ऐसे में भाजपा को उम्मीद थी कि दारा सिंह के फिर से भाजपा में आने से ओबीसी उसकी तरफ आकर्षित होंगे। और इसका लाभ उसे घोसी उपचुनाव में मिलेगा। लेकिन ऐसा हुआ नहीं। सितंबर में हुए घोसी उपचुनाव को इंडिया गठबंधन बनाम बीजेपी नेतृत्व वाले एनडीए की पहली परीक्षा माना जा रहा था। जिसमें गठबंधन की जीत हुई थी। तो वहीं भाजपा के लिए ये इसलिए भी बड़ा झटका था क्योंकि 2022 में भी सपा के पक्ष में ओबीसी एकजुटता की कीमत भाजपा को मऊ, जौनपुर और आजमगढ़ जैसे निर्वाचन क्षेत्रों में चुकानी पड़ी थी। जहां सपा ने सभी 10 विधानसभा सीटें जीतीं थीं। ऐसे में भाजपा को एक बार फिर घोसी में हार मिलना उसके लिए करारा झटका माना जा रहा है। लेकिन भाजपा को लगा था कि दारा सिंह चौहान भाजपा के साथ आने से और राजभर के भी एनडीए में लौट आने से उसे पूर्वी यूपी में और भी मजबूती मिलेगी। क्योंकि भाजपा को पहले से ही निषाद पार्टी का समर्थन प्राप्त है। निषाद पार्टी मछुआरों और नाविकों यानी मल्लाह जैसे ओबीसी समुदाय के समर्थन का दावा करती है। इसके साथ ही कुर्मियों के मत का दावा करने वाली अपना दल (एस) भी भाजपा के साथ है। कुर्मी की संख्या ओबीसी में यादवों के बाद सबसे ज्यादा है। चौहान, राजभर, मल्लाह और कुर्मी जैसे ओबीसी मतों के साथ आने से भाजपा को लगता था कि पूर्वी यूपी में उसकी स्थिति काफी मजबूत हो चुकी है। लेकिन घोसी उपचुनाव की हार ने पश्चिमी के साथ-साथ पूर्वी यूपी में भी भाजपा को सोचने पर मजबूर कर दिया है। लेकिन पूर्वी यूपी में भाजपा इसलिए खुद को आश्वस्त करने का प्रयास करती है क्योंकि इन जाति समीकरण के साथ ही भाजपा के सबसे बड़े दो चेहरे पीएम मोदी और सीएम योगी भी पूर्वी यूपी के वाराणसी और गोरखपुर का प्रतिनिधित्व करते हैं। यही वजह है कि भाजपा के लिए असल चुनौती पश्चिमी यूपी ही बना हुआ है। जिसको लेकर भाजपा चिंतित नजर आ रही है।

Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma

@Editor_Sanjay

जिद... सच की

पुलिस की लापरवाही से हुई वारदात

> कोर्ट में सुनवाई के दौरान पीड़िता ने जानकारी दी कि उसके साथ सामहिक दुष्कर्म भी हुआ उसके बाद आरोपियों पर गंभीर धाराएं जोड़ी गई हैं। मामले पर उबाल है। संस्थान के छात्रों ने इस मामले में जमकर हंगामा मचा रखा है। वाराणसी पुलिस कमिश्नरेट की ओर से इस मामले में कार्रवाई शुरू कर दी है। पुलिस अधिकारियों को भी कार्रवाई के दायरे में लाया गया है।

उत्तर प्रदेश के वाराणसी स्थित आईआईटी बीएचयू की छात्रा से दरिंदगी ने यूपी की कानून व्यवस्था पर तो सवालिया निशान तो लगाया ही साथ सभ्य समाज को भी आईना दिखाया है। कोर्ट में सुनवाई के दौरान पीड़िता ने जानकारी दी कि उसके साथ सामहिक दुष्कर्म भी हुआ उसके बाद आरोपियों पर गंभीर धाराएं जोड़ी गई हैं। मामले पर उबाल है। संस्थान के छात्रों ने इस मामले में जमकर हंगामा मचा रखा है। वाराणसी पुलिस कमिश्नरेट की ओर से इस मामले में कार्रवाई शुरू कर दी है। पुलिस अधिकारियों को भी कार्रवाई के दायरे में लाया गया है। हालांकि लोगों का कहना है कि अगर पुलिस ने पहले से इस ओर ध्यान दिया होता तो यह घटना न घटती। दरअसल, बुधवार एक नवंबर को आईआईटी-बीएचयू परिसर में बुलेट पर सवार होकर आए तीन लोगों ने छात्रा के साथ छेड़खानी की। उसके कपड़े उतार कर वीडियो बनाया। उसके साथी के साथ मारपीट भी की।

इसी प्रकार का मामला दो दिन पहले यानी सोमार 30 अक्टूबर की रात घटी थी। उस छात्रा के साथ भी इसी प्रकार की छेड़खानी की गई थी। इस बारे में प्रॉक्टर कार्यालय को सूचित किया गया था। प्रॉक्टर कार्यालय की ओर से इस मामले में कार्रवाई की जा रही थी। इसी बीच दूसरी घटना सामने आ गई। आईआईटी-बीएचयू स्टूडेंट्स पार्लियामेंट के कई सदस्यों ने कहा कि पिछली घटना में कार्रवाई करने में देरी हुई। हालांकि, डीन कार्यालय कार्रवाई शुरू होने का दावा कर रहा है। दोनों घटनाएं परिसर में ऐसे स्थान पर हुई, जहां पर कम लोग आते-जाते हैं। बुधवार को हुई घटना को लेकर आईआईटी- बीएचयू के छात्रों ने व्यापक विरोध प्रदर्शन किया। पीड़ित छात्रा का कहना है कि तीन अज्ञात लोगों ने उसे जबरन चूमा, उसके कपड़े उतार दिए। तस्वीरें और वीडियो रिकॉर्ड किए। उसने यह भी कहा था कि आरोपी ने उसे जबरन ले जाने का प्रयास किया। उस समय वह अपने पुरुष मित्र के साथ थी। सोमवार के मामले में भी छात्रा पुरुष मित्र के साथ थी, उस दौरान उन पर कथित तौर पर हमला किया गया। स्टूडेंट्स पार्लियामेंट के ने आरोप लगाया कि बुधवार की घटना से दो दिन पहले सोमवार रात 1.30 बजे उसी स्थान पर घटना घटी थी। इसमें चार लोग शामिल थे। वे दो वाहनों में आए थे। उन्होंने छात्र को पीटा और छात्रा को पीछे से छुआ। छात्रा मामले को बढ़ाना नहीं चाहती थी। उसे माता- पिता के सवाल उठाने का डर था। हालांकि, बदमाशों ने जिस छात्र की पिटाई की गई थी, उसने छात्र संसद के सदस्यों के साथ मिलकर मंगलवार को प्रॉक्टर कार्यालय में लिखित शिकायत दर्ज कराई। संस्थान प्रबंधन के साथ बैठक की है। सुरक्षा के मसले पर समीक्षा की गई है।

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

बागियों के रंग में बदरंग चुनावी फाग

हेमंत पाल

इस बार मध्यप्रदेश का विधानसभा चुनाव भाजपा और कांग्रेस दोनों के लिए प्रतिष्ठा का प्रश्न बन गया है। भाजपा को अपनी साढ़े 18 साल पुरानी राजनीतिक विरासत बचानी है तो कांग्रेस को भाजपा से वो हिसाब बराबर करना है, जब भाजपा ने कांग्रेस में बगावत करवाकर उसकी 15 महीने की सरकार पलट दी थी। यही वजह है, कि दोनों ने दम ठोंककर चुनाव जीतने को चुनौती समझ लिया। दोनों के लिए ये मुकाबला आसान नहीं है। एक कारण यह भी है कि दोनों पार्टियों के लिए ही बागियों ने बड़ा संकट खड़ा कर दिया है। ऐसे में समझ नहीं आ रहा कि हवा का रुख किस तरफ है। यह भी कहा जा सकता है कि नतीजों का दारोमदार बागियों की ताकत पर टिका है। क्योंकि, बागी भले जीत न सकें, पर दूसरों का खेल बिगाड़ने में माहिर साबित होंगे। पार्टी से बगावत करने में कांग्रेस के नेताओं की संख्या भाजपा से ज्यादा है।

मध्यप्रदेश की राजनीति साढ़े 18 साल से एक तरह से ठहर-सी गई थी। वर्ष 2003 में जब दिग्विजय सिंह को हराकर उमा भारती ने प्रदेश में भाजपा का झंडा गाड़ा, उसके बाद से तो कांग्रेस हाशिये से भी नीचे चली गई। वर्ष 2018 से पहले तक भाजपा का एकछत्र राज रहा। लेकिन, पिछले (2018) विधानसभा चुनाव में कांग्रेस ने भाजपा को चंद सीटों का बहुमत पाकर सत्ता से धकेल दिया था। कमलनाथ ने 15 महीने सरकार चलाई ही थी कि अचानक राजनीतिक भूचाल आ गया। ज्योतिरादित्य सिंधिया ने अपने 22 राजनीतिक सैनिकों को लेकर कांग्रेस में बगावत कर दी। इस प्रसंग ने गुजरात में 1975 में हुई केशुभाई पटेल की सरकार के खिलाफ हुई बगावत की याद दिला दी, जब शंकरसिंह वाघेला ने अपने समर्थक विधायकों को लेकर खजुराहो में डेरा डाल दिया था। लेकिन, ज्योतिरादित्य सिंधिया उससे आगे बढ़कर सीधे भाजपा में शामिल हो गए और प्रदेश में फिर भाजपा की सरकार बन गई। मध्यप्रदेश विधानसभा में फिलहाल भाजपा के 127 विधायक और कांग्रेस के 96 विधायकों के अलावा 4 निर्दलीय, दो बसपा के और एक समाजवादी पार्टी का विधायक है।

230 विधानसभा सीटों वाली विधानसभा में बहुमत के लिए 116 विधायकों का जादुई आंकड़ा होना जरूरी है। प्रदेश में सिंधिया की बगावत के बाद जो हुआ, वो एक लम्बी राजनीतिक गाथा है! क्योंकि, जिस भी इलाके में सिंधिया समर्थकों ने भाजपा में घुसपैठ की, वहां भाजपा के पुराने नेताओं में असंतोष पनपा। भाजपा में सबसे ज्यादा नाराजगी ग्वालियर-चंबल इलाके में दिखाई दी। इसके अलावा मालवा इलाके की कुछ सीटें भी इस वजह से भाजपा नेताओं की नाराजगी का शिकार बनीं। यही कारण है, कि इस बार का विधानसभा चुनाव उस बगावत से मुक्त नहीं है। प्रदेश में भाजपा और कांग्रेस दोनों ही पार्टियां इस चुनाव में अपने बागियों से परेशान हैं। देखा जाए तो बगावत का झंडा चुनाव से काफी पहले से भाजपा में उठता दिखाई देने लगा था। पूर्व मुख्यमंत्री कैलाश जोशी के विधायक बेटे दीपक जोशी और इंदौर और बदनावर के विधायक भंवरसिंह शेखावत ने सबसे पहले पार्टी को निशाने पर लिया। अंततः दोनों पार्टी छोड़कर कांग्रेस के पाले में चले गए और अब ये दोनों नेता कांग्रेस के उम्मीदवार हैं। लेकिन, यहां से शुरू हुआ बगावत का सिलसिला आंधी बनकर चुनावी चुनौती बन गया। इस बार मध्यप्रदेश के ज्यादातर इलाकों में राजनीति के पुराने खिलाड़ी ही अपनों के लिए चुनौती बने हैं। वे अपनी परंपरागत पार्टी से बगावत करके उन्हें चुनौती देने के लिए चुनाव में खड़े हो गए। इस तरह से उन्होंने अपनी दशकों पुरानी पारिवारिक विरासत को तोड़ दिया। जबकि, मध्य प्रदेश के राजनीतिक संस्कार ऐसे रहे हैं कि कई नेताओं की दो-तीन पीढ़ियां एक ही पार्टी में रहीं। अभी भी कुछ नेताओं की नई पीढ़ियां चुनाव मैदान में हैं। लेकिन, 2023 का चुनाव माहौल बदला-सा है। भाजपा और कांग्रेस को 40 से ज्यादा सीटों पर इन बागियों से ही चुनौती मिल रही है। कुछ को तो मना लिया, पर कई ने पार्टी उम्मीदवारों की नींद उड़ा दी। भाजपा की कोशिशों के बाद भी करीब 14 सीटों पर बागी खतरा बने हैं।

इन बागियों ने जब नामांकन पत्र दाखिल किए, तब पता चला कि दोनों पार्टियों में इनकी संख्या करीब 80-90 के करीब है। इनमें करीब 40-45 ऐसे थे, जो खेल बिगाड़ सकते हैं। दोनों पार्टियों के लिए इन्हें मनाना टेढ़ी खीर इसलिए था कि इन नाराज नेताओं में बड़ी संख्या उनकी है, जिनकी उम्र ज्यादा है। अगले विधानसभा चुनाव में ये मैदान में उतरने के काबिल नहीं होंगे, इसलिए वे हर हालत में जोर-आजमाइश में लगे रहे। इस चुनाव का एक महत्वपूर्ण फैक्टर यह भी रहा, कि बगावत करने वालों को साधने के लिए तीसरा मोर्चा तैयार दिखा।

उपकरणों के साथ मानवीय गरिमा की रक्षा हो

दीपिका अरोड़ा

भूमिगत सीवर सिस्टम ने भले ही शहरी व्यवस्था को सुविधाजनक बना दिया हो किंतु वर्ष 1993 में, आधिकारिक रूप से प्रतिबंधित होने के बावजूद हाथ से मैला ढोने की प्रथा आज भी जारी है। सफाई की सुरक्षाविहीन मैन्युअल प्रक्रिया न जाने कितने कर्मियों को शारीरिक-मानसिक रूप से रुग्ण बना देती है, कई बार तो परिवार का आश्रयदाता ही छीन लेती है। इसी संदर्भ में दाखिल एक जनहित याचिका पर फैसला सुनाते हुए सर्वोच्च न्यायालय ने सीवर सफाई के दौरान सफाई कर्मी की मृत्यु होने पर, बतौर मुआवजा, परिवार को 30 लाख रुपये देने का आदेश दिया। स्थायी दिव्यांग होने पर न्यूनतम 20 लाख रुपये, अन्य प्रकार की दिव्यांगता में सरकारी अधिकारियों को 10 लाख रुपये अदा करने होंगे।

मानवीय दृष्टिकोण से कई असंवेदनशील पहलुओं सहित रोग जनक एवं प्राणघातक होने की वजह से निश्चय ही यह विचारणीय विषय है। भारतीय संविधान का अनुच्छेद 14, 17, 21 तथा 23 हाथ से मैला उठाने वालों को सुरक्षा-गारंटी प्रदान करता है। भूमिगत सफाई से पूर्व कर्मचारियों को आवश्यक सुरक्षा उपकरण मुहैया करवाना यद्यपि राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग तथा मुंबई हाईकोर्ट द्वारा जारी दिशा-निर्देशों एवं सरकारी अध्यादेश, 2008 के अंतर्गत कानूनी प्रावधानों में आता है। इसके बावजूद नियमित सफाई कर्मियों के अलावा संविदा-ठेके पर भर्ती मजदूरों को बिना किसी सुरक्षा व्यवस्था मैनहोल में उतारना आम बात है। इंसानी जिंदगी से खुलेआम खिलवाड़ दर्शाता एक वीडियो बीते दिनों खासा चर्चित रहा, जिसमें बिना किसी सुरक्षा-व्यवस्था एवं सेफ्टी किट के, मुंह उल्टा करके सीवर होल की सफाई कर रहे कर्मी के पांव अन्य कर्मी ने पकड़ रखे थे। अधिकारियों का लापरवाह रवैया दर्शाती यह तस्वीर हाथ से मैला उठाने की प्रथा के उन्मूलन-प्रयासों पर प्रश्नचिन्ह है।

गौरतलब है, मानव अपशिष्ट तथा हानिकारक पदार्थों के सीधे संपर्क में आने के कारण उपजे गंभीर रोगों से असामयिक मृत्यु का जोखिम बढ़ जाता है। गहरे कुंडों में जमा रसायन विषैली गैसें उत्पन्न कर दमघोंटू माहौल बनाते हैं, जिसका खामियाजा सफाईकर्मियों को जान देकर चुकाना पड़ता है। जुलाई, 2022 के दौरान लोकसभा में पेश आंकड़ों का हवाला देते हुए कोर्ट ने गत 5 वर्षों के दौरान 347 लोगों की मृत्यु होने की बात कही। अधिकांश मामलों में परिजनों को पर्याप्त मुआवजा न मिल पाना अन्य त्रासदी रही, जबकि वर्ष 2014 में सर्वोच्च न्यायालय के आदेशानुसार, वर्ष 1993 से सीवेज कार्य में मरने वाले व्यक्तियों की पहचान करना तथा मुआवजे के रूप में प्रत्येक परिवार को 10 लाख रुपए प्रदान करना अनिवार्य बनाया गया था। सरकारी आंकड़ों के अनुसार, बीते 20 वर्षों में 989 कर्मी सीवर साफ करते समय मौत का ग्रास बने।

प्रतिषेध तथा पुनर्वास अधिनियम, 2013 इस कुप्रथा के उन्मूलन हेतु प्रतिबद्ध है किंतु केंद्रीय सामाजिक न्याय व अधिकारिता मंत्रालय द्वारा जून माह में जारी आंकड़े बताते हैं, 766 में से मात्र 508 जिले स्वयं को हाथ से मैला ढोने की प्रथा से मुक्त घोषित कर पाए। यह विसंगति प्रथा की असल स्थिति व सरकारी प्रयासों की प्रभावशीलता को लेकर चिंता उत्पन्न करती है। मशीनी युग में भी अधिकांश नगरपालिकाओं के पास सीवेज सिस्टम की सफाई हेतु नवीनतम संयंत्र उपलब्ध न होना आश्चर्यजनक है। जातिगत हाशिये पर धकेले समुदायों के लिए वैकल्पिक रोजगार अवसरों तक पर्याप्त पहुंच न होने के कारण, आजीविका के तौर पर हाथ से मैला ढोने का काम स्वीकारना एक विवशता बन जाता है। वहीं अकुशल मजदूरों द्वारा सस्ती मजदूरी में कार्य निपटाने की सोच भी इस सामाजिक कलंक को मिटने नहीं देती है? हाथ से मैला ढोना व्यक्ति की गरिमा तथा मानवाधिकारों का स्पष्ट उल्लंघन है। सामाजिक भेदभाव बढ़ाने के साथ यह भावनात्मक तनाव को भी जन्म देता है। इसी के दृष्टिगत, पीठ ने प्रथा की समाप्ति सहित केंद्र तथा राज्य सरकारों को 'मैनुअल स्कैवेंजर्स पुनर्वास' हेतु समुचित कदम उठाने तथा पीड़ितों एवं उनके परिजनों के लिए छात्रवृत्ति व अन्य कौशल विकास कार्यक्रम सुनिश्चित बनाने का आदेश भी दिया। जान को जोखिम में डालने वाली यह प्रथा वास्तव में समाज की संकीर्ण सोच की परिचायक है जो मानवीयता के स्तर पर मानव को मानव से विलग करती है।

समुचित निवेश द्वारा आधुनिक शौचालयों, सीवेज उपचार संयंत्रों तथा कुशल अपशिष्ट प्रबंधन प्रणालियों के निर्माण सहित स्वच्छता के बुनियादी ढांचे में सुधार लाया जाए तो नि:संदेह, अपशिष्ट निपटान के लिए सुरक्षित विकल्प मिल जाएंगे। पहल के तौर पर, सरकारी-गैर सरकारी संगठन व्यावसायिक प्रशिक्षण प्रदान करने के गंभीरतापूर्ण प्रयास करें तो सीवर सफाई कर्मियों के जीवन की दिशा व दशा बदल सकती है। जीवन अनमोल है। आर्थिक संबल देने वाला मुआवजा भी, परिजन-विछोह क्षति की भरपाई नहीं कर पाता। जैसा कि पीठ ने सरकारी एजेंसियों को निर्देश दिया, सीवर-मौत से जुड़े मामलों का हाईकोर्ट के संज्ञान में आना अनिवार्य है। कानून यदि कड़ाई से लागू हों तो एजेंसियों को सुरक्षा उपकरणों तथा नियमों के प्रति सचेत एवं संवेदनशील होना ही पड़ेगा। संभवत: फिर मुआवजा देने की नौबत ही न आए!

ईको फ्रेंडली तरीके से मनाएं दिवाली

घर सजावट में काम आएंगे ये आइडियाज

दिवाली का त्यौहार नजदीक आ रहा है। जहां इसे लेकर लोगों में जोश और उमंग है वहीं बढ़ते प्रदूषण को लेकर टेंशन भी। दिल्ली- एनसीआर में दिवाली के पहले ही हालात इतने खराब हैं और दिवाली के बाद तो स्थिति और ज्यादा बिगड़ने के आसार हैं। ऐसे में दिवाली के त्योहार को ईको-फ्रेंडली तरीके से मनाएं और प्रदूषण को बढ़ने से रोकने में मदद करें। इसके लिए रंगोली बनाने से लेकर लाइट्स व दीये की सजावट, उपहारों का चयन हर एक चीज़ का ध्यान रखना होगा। दिवाली पर इस्तेमाल होने वाले पटाखे, केमिकल्स और प्लास्टिक लंबे समय तक प्रदूषण बने रहते हैं, ऐसे में आपकी छोटी सी पहल बहुत बड़ा योगदान साबित हो सकती है। इस दिवाली न केवल अंधकार पर प्रकाश की विजय का जश्न मनाएं बल्कि पर्यावरण पर सकारात्मक प्रभाव भी डालें। दीयों की सजावट के इन इको-फ्रेंडली आइडियाज के साथ, आप अपने घर को एक विवेकपूर्ण, हरित चमक से रौशन कर सकते हैं, जिससे यह त्यौहार वास्तव में खास बन जाएगा।

फूल और पत्तियों के कंदील

अपने गॉर्डन में जाएं और फूल और पत्तियों को इकट्ठा करें। उस पर गोंद की एक पतली परत चढ़ाएं और नॉर्मल कागज का इस्तेमाल से इससे सुंदर कंदील बना सकते हैं।

ग्लास जार के दीए इस्तेमाल करें

घर में पड़े पुराने कांच के जार को घर को सजाने और जगमगाने में इस्तेमाल करें, जो बहुत ही टिकाऊ ऑपशन है। जार को अच्छी तरह से साफ करें लें और इसमें चमकीले रंग भर दें। इसके अंदर एक टीलाइट या तेल का दीपक रखें। घर के अलग-अलग कॉर्नर पर रख दें। ये बहुत ही खूबसूरत लगेगा।

मिट्टी के बर्तन से सजाएं

दीयों के अलावा दिवाली के दौरान मिट्टी के तरह-तरह के बर्तन भी मिलते हैं, तो आप इन्हें भी सजावट के लिए इस्तेमाल में ला सकते हैं। मिट्टी के बर्तनों को अलग-अलग रंगों से सजाकर या उस पर तरह-तरह की कलाकृतियां बनाकर इसे बिल्कुल नया रूप दे सकते हैं। मिट्टी के दीए और बर्तन न सिर्फ देखने में सुंदर लगते हैं, बल्कि आपके इस च्वॉइस से स्थानीय कारीगरों को भी बहुत बड़ा सपोर्ट मिलता है।

नारियल के छिलके के दीए

नारियल के खोपरे को शानदार दीयों में बदल कर आप घर की सुंदरता बढ़ा सकते हैं। सबसे पहले खोल को अंदर और बाहर से साफ कर लें। उस पर कोई चमकीला या रंग-बिरंगा कपड़ा बांध दें। एक छोटा होल्डर रखकर उस पर तेल का दीया या मोमबत्ती रख कर जलायें। नारियल के खोल के दीए बेहद आकर्षक लगते हैं। साथ ही पर्यावरण के अनुकूल भी होती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में लकड़ी की जगह नारियल के छिलके को जलाकर खाना बनाया जाता है। लकड़ी को जलाने में परेशानी होती है लेकिन नारिलय के छिलके वाली जट्टे को आसानी से जलाया जा सकता है। पहले छिलके में आग लगाते हैं फिर स्वतः लकड़ी में आग लग जाती है। इस प्रकार नारियल के छिलके बड़े काम की चीज है, इसे फेंके नहीं इस्तेमाल करें।

हंसना मना है

एक नई शादीशुदा औरत कोक पी रही थी, उसमें एक मच्छर गिर गया, औरत ने उसे निकाला तो मच्छर बोला, मां!
औरत- तूने मुझे मां क्यों कहा? मच्छर- मैं तेरी कोक से निकला हूं, मां!

फ्रेंड- यार तुम्हारी दुकान मिठाई की है, तो क्या तुम्हारा दिल नहीं करता, मिठाई खाने को? संता- यार करता तो बहोत है, लेकिन पापा रसगुल्ले गिन के जाते है, तो.. इसलिए, चूसकर रख देता हूं।

मोहब्बत के खर्चों की बड़ी लंबी कहानी है, कभी फिल्म दिखानी है तो कभी शॉपिंग करानी है, मास्टरजी रोज कहते है कहां है फीस के पैसे? उसे समजाऊं मैं कैसे की मुझे छोरी पटनी है!

मैं बचपन से इतना प्रतिभाशाली रहा हूं कि रिश्तेदार परीक्षा परिणाम के बाद सिर्फ इतना ही पूछते है, तू पास हुआ या नहीं?

जिन्दगी की बात करते हो, यहां तो मौत भी हम से खफा है, हम ताज क्यों बनाए, अपनी तो मुमताज ही बेवफा है।

अर्ज किया है, फिजा में महकती शाम हो तुम, प्यार का पहला जाम हो तुम, और क्या कहे जानम तुम्हारे बारे में, खर्चे का दूसरा नाम हो तुम..

कहानी | कद्दू का तीर्थ स्नान

हमारे यहां तीर्थ यात्रा का बहुत ही महत्व है। पहले के समय यात्रा में जाना बहुत कठिन था। पैदल या तो बैल गाड़ी में यात्रा की जाती थी। थोड़े थोड़े अंतर पे रुकना होता था। विविध प्रकार के लोगो से मिलना होता था, समाज का दर्शन होता था। विविध बोली और विविध रीति-रीवाज से परिचय होता था। कई कठिनाईयों से गुजरना पड़ता, कई अनुभव भी प्राप्त होते थे। एकबार तीर्थ यात्रा पे जाने वाले लोगों का संघ, संत तुकाराम जी के पास जाकर उनके साथ चलने की प्रार्थना की। तुकारामजी ने अपनी असमर्थता बताई। उन्होंने तीर्थ यात्रियों को एक कड़वा कद्दू देते हुए कहा- मैं तो आप लोगों के साथ आ नहीं सकता लेकिन आप इस कद्दू को साथ ले जाईए और जहां-जहां भी स्नान करे, इसे भी पवित्र जल में स्नान करा लाये। लोगो ने उनके गूढार्थ पे गौर किये बिना ही वह कद्दू ले लिया और जहां-जहां गए, स्नान किया वहां-वहां स्नान करवाया। मंदिर में जाकर दर्शन किया तो उसे भी दर्शन करवाया। ऐसे यात्रा पूरी होते सब वापस आए और उन लोगों ने वह कद्दू संतजी को दिया। तुकारामजी ने सभी यात्रियों को प्रीतिभोज पर आमंत्रित किया। तीर्थयात्रियों को विविध पकवान परोसे गए। तीर्थ में घूमकर आये हुए कद्दू की सब्जी विशेष रूप से बनवायी गयी थी। सभी यात्रियों ने खाना शुरू किया और सबने कहा कि यह सब्जी कड़वी है। तुकारामजी ने आश्चर्य बताते कहा कि यह तो उसी कद्दू से बनी है, जो तीर्थ स्नान कर आया है। बेशक यह तीर्थाटन के पूर्व कड़वा था, मगर तीर्थ दर्शन तथा स्नान के बाद भी इसी में कड़वाहट है! यह सुन सभी यात्रियों को बोध हो गया कि, हमने तीर्थाटन किया है लेकिन अपने मन को एवं स्वभाव को सुधारा नहीं तो तीर्थयात्रा का अधिक मूल्य नहीं है। हम भी एक कड़वे कद्दू जैसे कड़वे रहकर वापस आये है।

7 अंतर खोजें

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष
आज आपको कई ऐसे कार्य करने पड़ेंगे, जिनमें आपकी रुचि नहीं है। मोबाइल फ़ोन आज आपके काम में बाधा खड़ी कर सकता है। इसके ज़्यादा इस्तमाल से बचें।

तुला
आज आप किसी काम को पूरा करने के लिए जितनी कोशिशें करेंगे उतने ही सफल हो सकते हैं। महिला तथा छात्रवर्ग को नेवीगेशन में अवसर मिलेंगे।

वृषभ
आज का दिन आपके लिए शांति भरा रहेगा। आज आपको शासन व सत्ता के गठजोड़ का भरपूर लाभ मिलता दिख रहा है। दांपत्य जीवन में तनाव रहने से मन उतना खुश नहीं होगा।

वृश्चिक
आज के दिन आपके लिए मिश्रित परिणाम लेकर आएगा। आज आप यदि अपने जीवनसाथी से सलाह लेकर किसी कार्य को करेंगे, तो उसमें सफलता हासिल कर सकेंगे।

मिथुन
आज आपका दिन उत्तम रहेगा। आज ऑफिस में हर काम को बारीकी से पूरा करने की कोशिश करेंगे। पुराने दोस्तों के साथ कहीं घुमने जाने का अवसर मिलेगा।

धनु
आज दिन मिला-जुला रहने वाला है। किसी पुरानी बात को लेकर आज तनाव की स्थिति बनेगी। कोर्ट-कचहरी के मामलों में भी फैसला उम्मीद के अनुसार आयेगा।

कर्क
आज आपकी सभी योजनाएं सफल होंगी। कार्यस्थल पर आपका ध्यान भटक सकता है जो की आपकी उत्पादकता को कम कर सकता हैं। अनावश्यक व्यय करने से बचें।

मकर
अगर आप विद्यार्थी हैं और उच्च शिक्षा को लेकर कोई प्रयास कर रहे हैं तो आज आपको अपने प्रयासों में सफलता मिलने की प्रबल संभावना है।

सिंह
आज के दिन आप अपने आपको ऊर्जावान महसूस करेंगे, जिसके कारण आप अपने सभी कामों को पूरी फूर्ती से निपटाने में लगे रहेंगे। प्रेम जीवन में दिन बेहतर रहेगा।

कुम्भ
आज के दिन आपके वैवाहिक सुखों में व्यवधान आ सकता है। आज आपको कोई ऐसा विपरीत समाचार सुनने को मिलेगा, जिसके कारण आपका मन परेशान रहेगा।

कन्या
आज आप का दिन बेहतरीन रहने वाला है। पहले से बनाई गई योजनाओं को अमली-जामा पहनाने के लिये आज का दिन अच्छा रहने वाला है।

मीन
आज का दिन उत्तम रहेगा। अपना मत बिना झिझक के सबके सामने रखें जो आपके लिए कारगर साबित होगा। इस राशि के इंजीनियर के लिये दिन आर्थिक रुप से बेहतर रहेगा।

बॉलीवुड | मन की बात

मुझे अनिल कपूर के बेटे होने का कोई फायदा नहीं मिला : हर्षवर्धन

अनिल कपूर के बेटे हर्षवर्धन कपूर ने 9 नवंबर को अपना 33वां बर्थडे मनाया। एक्टर का जन्म मुंबई में हुआ था। कपूर खानदान के बाकी सदस्यों की तरह हर्षवर्धन कपूर भी अभिनय में किस्मत आजमा चुके हैं, लेकिन वो अपने पिता की तरह फिल्मी दुनिया में नाम नहीं कमा सके। एक्टर का कहना है कि उन्हें कभी अनिल कपूर के बेटे होने का फायदा नहीं मिला है। हर्षवर्धन कपूर ने मीडिया से बात करते दौरान कहा था कि सच्चाई तो ये है कि मैंने जिन डायरेक्टर्स के साथ मैंने काम किया है, उन्हें इससे फर्क नहीं पड़ता है कि मैं किसका बेटा हूं। मुझे लगता विक्रमादित्य मोटवाने, वसन बाला और राकेश ओमप्रकाश मेहरा जैसे लोगों को सिर्फ काम से मतलब होता है। मुझे कभी स्पेलश स्ट्रीट नहीं किया जाता, सिर्फ इसलिए क्योंकि मैं अनिल कपूर का बेटा हूं। स्टारकिड होने से कुछ नहीं होता है। हर्षवर्धन ने अपना एक्टिंग करियर साल 2016 में आई फिल्म मिर्जिया से शुरू किया था, पर वह फिल्मी दुनिया में 2015 में ही कदम रख चुके थे। हर्षवर्धन ने 2015 में आई फिल्म बॉम्बे वेलवेट में असिस्टेंट डायरेक्टर के रूप में काम किया था। जिसके एक साल बाद यानी 2016 में उन्होंने फिल्म मिर्जिया से बतौर एक्टर डेब्यू किया। इस फिल्म में उनके अभिनय की जमकर तारीफ हुई, पर बॉक्स ऑफिस पर यह फिल्म औंधे मुंह गिर गई। पहली फिल्म के फ्लॉप होने के बाद हर्षवर्धन साल 2018 में फिल्मी पर्दे पर नजर आए। इस साल उनकी फिल्म भावेश जोशी सुपरहीरो रिलीज हुई थी। इस फिल्म का हाल भी पहली फिल्म जैसा हुआ। हर्षवर्धन की तारीफ हुई, लेकिन ये फिल्म भी बॉक्स ऑफिस पर औंधे मुंह गिर पड़ी। हर्षवर्धन कोशिश पूरी कर रहे थे खुद को साबित करने की लेकिन किस्मत उनके साथ नहीं थी।

मां के कहने पर साइन की थी फिल्म लाइगर

बॉलीवुड मसाला

करण जौहर के चर्चित शो कॉफी विद करण के आठवें सीजन में अनन्या पांडे ने सारा अली खान के साथ शिरकत की। इस दौरान दोनों ने फिल्म निर्देशक से कई दिलचस्प बातें साझा कीं। अनन्या पांडे अपनी निजी जिंदगी और करियर पर भी बात करती नजर आईं। बता दें कि बीते वर्ष अनन्या ने साउथ एक्टर विजय देवरकोंडा के साथ फिल्म लाइगर में काम किया था, जो बुरी तरह फ्लॉप रही। अब अभिनेत्री ने इस पर अपनी प्रतिक्रिया दी है।

अनन्या पांडे ने कहा कि उन्हें हमेशा अपनी मां भावना पांडे का सपोर्ट मिला है। यह उनके लिए एक ब्लेसिंग है। अनन्या का कहना है कि उन्होंने कम उम्र में करियर की शुरुआत की, ऐसे में उन्हें अपने माता-पिता के सपोर्ट की काफी जरूरत महसूस हुई, खासतौर से मां का सपोर्ट उनके लिए जरूरी रहा, जो उन्हें मिला भी।

अनन्या ने खुलासा किया कि लाइगर फिल्म साइन करने के लिए भी उन्हें उनकी मां ने कहा था। अनन्या ने कहा कि उनकी मां अपने अंदाज में अपनी राय रखती हैं। इतना ही नहीं, जब फिल्म लाइगर बुरी तरह फ्लॉप हुई तो उनकी मां भावना पांडे की प्रतिक्रिया कैसी रही, इस बारे में भी अनन्या ने बात की।

अनन्या के मुताबिक हमेशा उनकी फिल्में देखने के बाद उनकी मां उन्हें कॉल और मैसेज करती हैं। लेकिन, विजय देवरकोंडा अभिनीत लाइगर देखने के बाद उन्हें अपनी मां से कोई प्रतिक्रिया नहीं मिली। जब अनन्या ने पूछा कि फिल्म कैसी लगी? इस पर उनकी मां का जवाब रहा, फन! अनन्या ने कहा कि उस फिल्म को मिले रिव्यू में यह सबसे खराब रहा।

अनन्या पांडे ने यह खुलासा भी किया कि लाइगर साइन करने के लिए उन्हें भावना पांडे और करण जौहर ने ही कहा था। अनन्या ने कहा, गलतियां सबसे होती हैं। काम की बात करें तो अनन्या के पास जोया अख्तर की खो गए हम कहां है, जिसमें अनन्या सिद्धांत चतुर्वेदी और आदर्श गौरव के साथ स्क्रीन शेयर करती नजर आएंगी।

एमी अवार्ड से सम्मानित हुईं एकता कपूर

एकता आर कपूर मनोरंजन जगत का एक ऐसा नाम हैं, जिन्हें किसी परिचय की जरूरत नहीं है। कंटेंट क्वीन के रूप में मशहूर, निर्माता का टेलीविजन और फिल्मों से लेकर ओटीटी तक मनोरंजन के सभी प्लेटफार्म्स पर दबदबा है। दर्शकों की पसंद और नापसंद के बारे में अपनी बेहद व्यावहारिक और सटीक समझ के साथ, वह एक दशक से अधिक समय से इंडस्ट्री पर राज कर रही हैं, जिसके लिए उन्हें कई पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। इस साल एमी में शानदार जीत के साथ एक और पुरस्कार उनके पास आया है, जिससे उनके लिए जश्न दोगुना हो गया है। रिपोर्ट्स की मानें तो, इस साल की दिवाली एकता के लिए और भी शानदार होने वाली है। जहां निर्माता अपने परिवार और इंडस्ट्री के दोस्तों के लिए एक भव्य पार्टी की मेजबानी करेंगी, वहीं वह प्रतिष्ठित पुरस्कार एमी में अपनी शानदार जीत का भी आनंद लेंगी। इस दिवाली एकता ने अपनी झोली में एक और उपलब्धि जोड़ ली है और यह उनके सभी उपलब्धियों का आनंद लेने लायक है। पद्मश्री प्राप्त करने वाली निर्माता, एकता नवंबर में 51वें अंतर्राष्ट्रीय एमी पुरस्कार समारोह में अंतर्राष्ट्रीय एमी निदेशालय पुरस्कार प्राप्त करने वाली पहली भारतीय फिल्म निर्माता होंगी। एकता हमेशा इस खेल में टॉप पर रही हैं और जनता के बीच सबसे अच्छा कंटेंट पेश किया है।

अजब-गजब | भारत के किस गांव में सबसे पहले होता है सूर्योदय

इस गांव में सुबह 4 बजे हो जाता है सूर्योदय

भारत जैसा अनोखा देश शायद ही आपको पूरी दुनिया में कहीं और देखने को मिलेगा। इस देश की खासियत ये है कि यहां पर आपको अलग-अलग जगहों पर अलग खान-पान, लोग, बोली, भाषाएं और मौसम देखने को मिलेंगे। यही नहीं, सूर्य उगने और ढलने तक के वक्त में बहुत फर्क होता है। पर क्या आपने कभी सोचा है कि आखिर भारत में सबसे पहले सूरज कहां उगता होगा? राज्य का नाम शायद लोग जानते होंगे, पर उस गांव का नाम 99 फीसदी लोगों को नहीं पता होगा, जहां सबसे पहले सूर्योदय होता है।

आज हम बात कर रहे हैं भारत के उस गांव के बारे में, जहां सबसे पहले सूर्योदय होता है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म कोरा पर कुछ वक्त पहले किसी ने ये सवाल किया-भारत में सबसे पहले सूरज कहां निकलता है? चलिए देखते हैं सबसे पहले कि लोगों ने इसका क्या उत्तर दिया।

शमवील नाम के एक यूजर ने कहा-1999 में अरुणाचल प्रदेश स्थित डोंग नामक जगह की खोज की गई, तो पता चला कि देश में सबसे पहले सूर्योदय यहीं होता है। रजनी कांत नाम के यूजर ने कहा- अरुणाचल प्रदेश में निकलता है अरुण मतलब सूरज। एक यूजर ने कहा- अरुणाचल प्रदेश, और इसीलिए इसे अरुणाचल यानी सूर्य का आंचल माना जाता है। अब ये तो लोगों को जवाब हो गए जो सही भी हैं। भारत में सबसे पहले सूर्योदय अरुणाचल प्रदेश में होता है। पर हमारा सवाल है कि वो कौन सा गांव है, जहां सबसे पहले सूर्य उदय होते दिखाई देता है। चलिए आपको इसका जवाब बताते हैं। अरुणाचल प्रदेश में डोंग घाटी है, यहां एक गांव है, जिसका नाम है डोंग। इस डोंग गांव में ही सबसे पहले सूर्योदय होता दिखाई देता है। आपको जानकर हैरानी होगी कि सुबह 4 बजे के करीब यहां सूर्योदय हो जाता है और शाम के 4 बजे तक सूर्यास्त होने लगता है। ये गांव धरती से करीब 1240 मीटर की ऊंचाई पर स्थित है। गांव अपने में ही बेहद अनोखा है। अब ये तो लोगों को जवाब हो गए जो सही भी हैं। भारत में सबसे पहले सूर्योदय अरुणाचल प्रदेश में होता है। पर हमारा सवाल है कि वो कौन सा गांव है, जहां सबसे पहले सूर्य उदय होते दिखाई देता है।

ये है दुनिया की सबसे अजीबोगरीब मछली, अंधेरे में टॉर्च लेकर चलती है

फ्लैशलाइट फिश दुनिया की सबसे अजीबोगरीब मछली है। इसके पास एक यूनिक चीज होती है, जो इसे अन्य मछलियों से अलग करती है। इनकी आंखों के नीचे एक बायोल्यूमिनसेंट ऑर्गन होता है, जो चमकदार नीली-हरी रोशनी निकालता है, जिसके कारण इसे लालटेन-आई मछली नाम से भी जाना जाता है। अब इसी अनोखी मछली का एक वीडियो वायरल हो रहा है। सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म 'एक्स' पर यह वीडियो @gunsnrosesgirl3 ने शेयर किया है, जिसमें देखा जा सकता है कि कैसे इन मछलियों की आंखों के नीचे लाइट चमकती है। वीडियो में चमकती लाइट को देखने से ऐसा लगता है कि मानो ये मछलियां अपने साथ टॉर्च लेकर चल रही हों। यह वीडियो देखने में बड़ा ही अद्भुत है। इस फ्लैशलाइट फिश का साइंटिफिक नाम एनोमालोपिडे है। ये मछलियां बहुत ही अद्भुत होती हैं कि इनकी खूबियों के बारे में आप जानकर हैरान रह जाएंगे। फ्लैशलाइट मछलियां रात्रिचर और गुप्त होती हैं, इसलिए इन्हें बहुत कम देखा जाता है। इनका शरीर नीले रंग के साथ गहरा काला होता है। वीडियो में देखा जा सकता है अंधेरा होने पर ये मछलियां पानी में गायब सी हो जाती हैं, केवल इनकी आंखों की नीचे का बायोल्यूमिनसेंट ऑर्गन ही चमकता है। Liveaquaria की रिपोर्ट के अनुसार, फ्लैशलाइट मछली के लाइट ऑर्गन में लाखों बायोल्यूमिनसेंट बैक्टीरिया (Bioluminescent Bacteria) होते हैं, जो लगातार नीली-हरी रोशनी पैदा करते हैं। आपको यह जानकर हैरानी होगी कि ये मछलियां अपने द्वारा उत्पन्न लाइट की तीव्रता को कंट्रोल यानी कम, ज्यादा या बंद भी कर सकती हैं। फ्लैशलाइट मछली शिकारियों से बचने के लिए अपनी रोशनी कम कर सकती हैं और अपनी प्रजाति की मछलियों के साथ कम्युनिकेट करने के लिए लाइट का इस्तेमाल करती हैं। ये मछलियां इंडो-पैसिफिक महासागर और कैरेबियन सागर में पाई जाती हैं।

अतुल प्रधान पर मुकदमा दर्ज डॉक्टर को धमकाने का आरोप

» उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक के निर्देश पर जांच शुरू

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मेरठ। मेरठ में समाजवादी पार्टी के विधायक अतुल प्रधान और उनके समर्थकों पर गंभीर धाराओं में मुकदमा दर्ज किया गया है। एक निजी अस्पताल में हंगामा और डॉक्टर के साथ बदसलूकी के मामले में सपा विधायक के खिलाफ शिकायत दर्ज की गई थी। सपा विधायक पर आरोप है कि एक मरीज का बिल कम करवाने के लिए पहुंचे थे, जहां उन्होंने और उनके समर्थकों ने गुंडई की। इस मामले पर राजनीति गरमा गई और उत्तर प्रदेश के उपमुख्यमंत्री बृजेश पाठक के निर्देश पर जांच भी हो रही है।

मेरठ के न्यूटीमा हॉस्पिटल पर सरधना क्षेत्र की रहने वाली एक मासूम बच्ची का इलाज चल रहा था। इसी मामले में समाजवादी पार्टी के विधायक अतुल प्रधान और उनके समर्थक डॉक्टर पर अनाप-शनाप बिल वसूली का आरोप लगाते हुए हंगामा करने पहुंच गए।वहीं अस्पताल में हंगामा और डॉक्टर के साथ गुंडई के मामले में मेरठ पुलिस ने थाना मेडिकल में एफआईआर दर्ज कर ली है। सपा विधायक अतुल प्रधान समेत बच्चों के पिता और विधायक के 40 समर्थकों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की गई है। इस मामले में जहां डॉक्टर सपा विधायक पर आरोप लगा रहे हैं। अतुल प्रधान भी अपनी सफाई पेश कर रहे हैं। लेकिन पुलिस अब सपा विधायक और उनके समर्थकों की गुंडई के मामले में जांच कर रही है।

सपा विधायक ने लगाया था अस्पताल में महंगी रेट पर दवाइयां बेचने का आरोप

सपा विधायक का आरोप है कि अस्पताल में महंगी रेट पर दवाइयां बिक रही है। डॉक्टर दवा का साल्ट लिखने की बजाय कोडिंग लिखकर दवा बिकवा रहे हैं। इस मामले की शिकायत उत्तर प्रदेश शासन तक पहुंच गई। जिसके बाद खुद उत्तर प्रदेश के डिप्टी सीएम बृजेश पाठक ने मामले का संज्ञान लिया और जिलाधिकारी मेरठ ने सीएमओ की अध्यक्षता में चार लोगों की टीम गठित की है, जो जांच करके अगले 3 दिन में रिपोर्ट सौंपेगी।

खड़ी बस में ट्रक की भिड़ंत छह लोगों की मौत, 27 घायल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

कुशीनगर में दर्दनाक हादसा

गोरखपुर। कुशीनगर हाईवे पर जगदीशपुर के पास बृहस्पतिवार की देर रात दो बस में तेज रफ्तार ट्रक ने पीछे से टक्कर मार दी। हादसे में छह यात्रियों की मौके पर ही मौत हो गई, जबकि 27 लोग घायल हो गए। घायलों को पांच एंबुलेंस से जिला अस्पताल और मेडिकल कॉलेज में भर्ती कराया गया है। इनमें से कुछ की स्थिति अति गंभीर है।

हादसे की सूचना पर एसपी सिटी सहित अन्य अधिकारी मौके पर पहुंच गए हैं। अधिकारियों ने सदर अस्पताल और मेडिकल कालेज के डॉक्टरों को भी अलर्ट कर दिया जिसके बाद डॉक्टर भी पहुंच गए। मरने वालों की पहचान की जा रही है। बताया जा रहा है कि गोरखपुर से एक अनुबंधित बस सवारियों को लेकर पडरौना जा रही थी। जगदीशपुर के मल्लपुर के पास बस का पहिया पंचर हो गया था। बस को सड़क के किनारे खड़ी करके चालक और कंडक्टर ने दूसरी बस मंगया था। एक खाली बस गोरखपुर से पहुंची और सवारियों को बैठा रही थी। कुछ सवारी बस में बैठ गए थे जबकि कुछ अभी दोनों बसों के बीच खड़े थे इस बीच एक तेज रफ्तार ट्रक ने बस में पीछे से टक्कर मार दी है। टक्कर इतनी जबरदस्त थी कि दो लोगों की मौके पर ही मौत हो गई है। उनके ऊपर पहिया चढ़ गया है जबकि दो दर्जन लोग घायल हो गए हैं इनमें एक दर्जन लोगों की अति गंभीर बताए जा रहे हैं। उधर, दुर्घटना के बाद अफसरों ने सदर और मेडिकल कालेज के डॉक्टरों को अलर्ट किया। भारी संख्या में घायलों के पहुंचने पर डॉक्टरों को बुला लिया गया है। दुर्घटनास्थल पर पहुंचे पांच एंबुलेंस से घायलों को सदर और मेडिकल कालेज ले जाया गया है। बताया जा रहा है कि बस में 30 से ज्यादा लोग सवार थे।

अंतरराष्ट्रीय हाइब्रिड सम्मेलन में जुटे लोग

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। मानसिक और विचार-संगत समागम - अंतरराष्ट्रीय हाइब्रिड सम्मेलन महाराजा बिजली पासी राजकीय महाविद्यालय के द्वारा आयोजित किया गया। जिसमें वैश्विक विशेषज्ञ, विद्वान, और प्रभावशाली व्यक्तियों ने प्रतिभाग किया कार्यक्र म का उद्घाटन एवं प्रारम्भ कैनबरा ऑस्ट्रेलिया से आयी श्रीमती पेनी डूत्रे, लखनऊ विश्वविद्यालय के प्रोफेसर आर पी सिंह एवं महाविद्यालय की प्रचार्या डॉ सुमन गुप्ता ने किया।

इस सम्मेलन में भारतीय प्रवासी समुदाय के अंतर्राष्ट्रीय प्रभाव पर गहरी चर्चा हुई और उसके महत्व को साझा किया गया। यह सम्मेलन वर्चुअल और स्थानीय तथा व्यक्तिगत दोनों माध्यमों से आयोजित किया गया था और उसने भारतीय प्रवासी समुदाय के योगदान को विभिन्न क्षेत्रों में प्रकट किया, जैसे आर्थिक, सांस्कृतिक, सामाजिक, और राजनीतिक क्षेत्र।

मांझी के साथ भाजपा धरने पर बैठी महागठबंधन का भी विरोध में धरना

» पूर्व सीएम जीतन ने कहा- इस्तीफा दें नीतीश कुमार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

पटना। विधानसभा सत्र के शुरूआत से पहले ही विधानसभा अध्यक्ष के चेंबर के बाहर पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी अपने समर्थकों के साथ धरने पर बैठ गए। उनके साथ नेता प्रतिपक्ष विजय सिन्हा सीएम नीतीश कुमार के इस्तीफे की मांग की। विपक्ष का विरोध प्रदर्शन देख महागठबंधन के नेता भी विधानसभा परिसर में विरोध प्रदर्शन करने लगे। वह प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का विरोध कर रहे हैं। हाथ में तख्तियां लेकर महागठबंधन के नेता विरोध प्रदर्शन कर रहे हैं।

इधर, सदन के अंदर हंगामा देखते हुए विधानसभा अध्यक्ष अवध बिहारी चौधरी ने विधानसभा की कार्यवाही दोपहर 2 बजे तक के लिए स्थगित कर दी गई है। विधानसभा सत्र के शुरुआत से पहले ही विधानसभा अध्यक्ष के चेंबर के बाहर पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी अपने समर्थकों के साथ धरने पर बैठ गए। उनके साथ नेता प्रतिपक्ष समेत कई भाजपा नेता भी मौजूद हैं। नेता प्रतिपक्ष विजय सिन्हा ने कहा कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार ने दलित समाज का अपमान किया है। उन्हें माफी मांगनी चाहिए। कुछ भाजपा नेता सीएम नीतीश के इस्तीफे की मांग कर रहे हैं। जीतन राम मांझी ने कहा कि जिस तरह से सीएम नीतीश कुमार ने उनका अपमान किया, वह बेहद ही गलत और अन्यायपूर्ण है। सीएम नीतीश कुमार की मानसिक स्थिति ठीक नहीं है। वह राज्य हित में निर्णय नहीं ले पा रहे हैं। इसलिए उन्हें तत्काल इस्तीफा दे देना चाहिए।

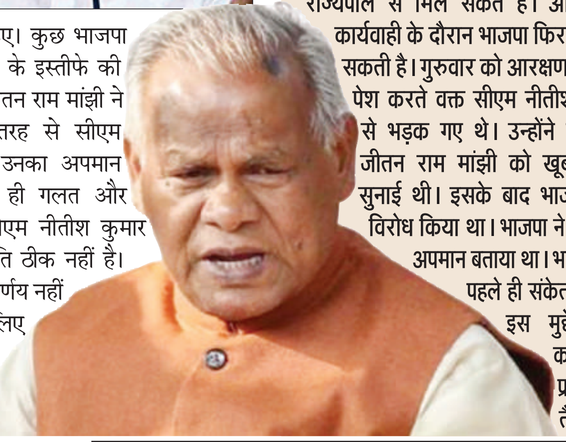

राज्यपाल से मिल सकते हैं पूर्व सीएम

बिहार विधान मंडल के शीतकालीन सत्र का आज आखिरी दिन है। हंगामे के बीच चौथे दिन यानी गुरुवार को विधानसभा आरक्षण संरक्षण विधेयक 2023 पास हो गया। भाजपा ने भी अपना समर्थन दिया। इधर, जीतन राम मांझी आज इस मुद्दे पर राज्यपाल से मिल सकते हैं। आज सदन की कार्यवाही के दौरान भाजपा फिर से हंगामा कर सकती है। गुरुवार को आरक्षण संशोधन बिल पेश करते वक्त सीएम नीतीश कुमार फिर से भड़क गए थे। उन्होंने पूर्व मुख्यमंत्री जीतन राम मांझी को खूब खरी-खोटी सुनाई थी। इसके बाद भाजपा ने इसका विरोध किया था। भाजपा ने इसे दलित का अपमान बताया था। भाजपा नेताओं ने पहले ही संकेत दे दिया है कि इस मुद्दे पर विरोध करेंगी। आज प्रदर्शन की तैयारी में हैं।

बोल्ट-सैंटनर के शिकार बने श्रीलंकाई चीते

» विश्वकप: न्यूज़ीलैंड ने 5 विकेट से रौंदा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। ट्रेंट बोल्ट के नयी गेंद से शानदार प्रदर्शन के बाद मिशेल सैंटनर ने पिच से पूरा फायदा उठाया जिससे न्यूज़ीलैंड ने विश्व कप मुकाबले में श्रीलंका को 171 रन पर समेट दिया। न्यूज़ीलैंड के लिए यह मुकाबला काफी अहम है क्योंकि उसके आठ अंक हैं और उसे भारत, दक्षिण अफ्रीका और आस्ट्रेलिया के साथ सेमीफाइनल में पहुंचने के लिए श्रीलंका के खिलाफ अंतिम लीग मैच जीत हासिल करने की जरूरत है।

न्यूज़ीलैंड ने टॉस जीतकर क्षेत्ररक्षण का फैसला किया। उसके बायें हाथ के तेज गेंदबाज बोल्ट (3/37) और बायें हाथ के स्पिनर सैंटनर (2/22) ने टीम की जरूरत के अनुरूप गेंदबाजी की। सलामी बल्लेबाज कुसल परेरा को एक रन पर विकेटकीपर टॉम लैथम ने जीवनदान दिया था जिन्होंने 28 गेंद में 51 रन की अर्धशतकीय पारी खेली। पिछले कुछ मैचों में 35 वर्षीय बोल्ट लय हासिल करने में जूझ रहे थे लेकिन उन्होंने यहां वापसी की। साउदी ने पहले पाथुम निसाका को आउट किया जिसके बाद बोल्ट ने श्रीलंकाई कप्तान कुसल मेंडिस का विकेट झटका। तीन गेंद के बाद बोल्ट ने फॉर्म में चल रहे सदीरा समरविक्रमा का विकेट झटका। दो ओवर बाद बोल्ट ने चरिथ असालंका को पगबाधा आउट किया जिससे श्रीलंका का स्कोर चार विकेट पर 70 रन हो गया। एंजेलो मैथ्यूज और धनंजय डिसिल्वा कुछ देर में सैंटनर की स्पिन का शिकार होकर सस्ते में पवेलियन पहुंचे। एक छोर से विकेट गिर रहे थे तो दूसरे छोर पर कुसल परेरा डटे थे और उन्होंने साउदी की गेंदों पर भी काफी अच्छे शॉट लगाये। वह टूनामेंट में केवल आस्ट्रेलिया के खिलाफ ही एक अर्धशतक जड़ पाये हैं और पिछली पांच पारियों में दोहरे अंक तक भी नहीं पहुंच सके। परेरा तेज गेंदबाज लॉकी फर्ग्यूसन की गेंद पर कवर ड्राइव से अपने 17वें वनडे अर्धशतक पर पहुंचे, पर उन्हें का शिकार हो गये। महीश तीक्षणा (नाबाद 38 रन) और दिलशान मधुशंका (18 रन) ने अंतिम विकेट के लिए 43 रन जोड़े जो श्रीलंका की पारी की सबसे बड़ी साझेदारी रही।

आजम खां के स्कूल को प्रशासन ने किया सील

» मोहलत देने से किया इंकार

» छात्राओं की छुट्टी, सामान की शिफ्टिंग शुरू

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

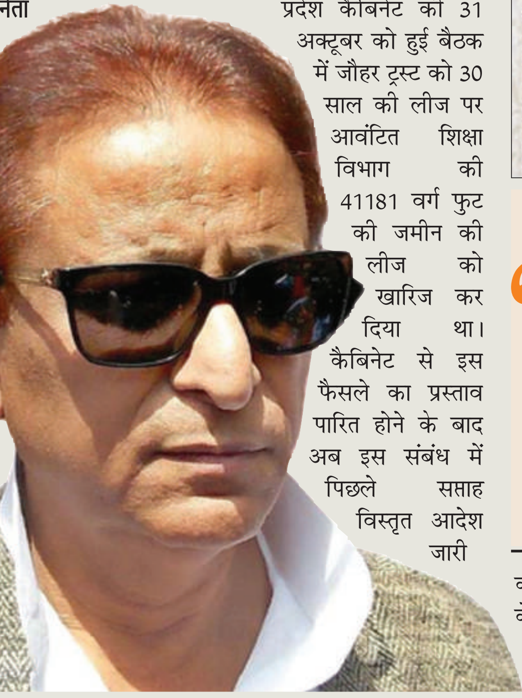

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के नेता आजम खां के कब्जे से शिक्षा विभाग की जमीन को मुक्त कराने की मोहलत गुरुवार को खत्म हो गई। स्कूल की ओर से मोहलत की अवधि बढ़ाए जाने की मांग की गई लेकिन प्रशासन ने इनकार कर दिया। इसके बाद रामपुर पब्लिक स्कूल (आरपीएस) का फर्नीचर और अन्य सामान हटाए जाने का कार्य किया गया। शुक्रवार को स्कूल को सील करने के लिए प्रशासनिक टीम मौके पर पहुंची। इसके बाद स्कूली छात्राओं को छुट्टी दे दी गई। बृहस्पतिवार को दोपहर बाद जिला विद्यालय निरीक्षक और बीएसए आरपीएस पहुंचे और स्कूल के सामान की शिफ्टिंग का जायजा लिया।

प्रदेश कैबिनेट की 31 अक्टूबर को हुई बैठक में जौहर ट्रस्ट को 30 साल की लीज पर आवंटित शिक्षा विभाग की 41181 वर्ग फुट की जमीन की लीज को खारिज कर दिया था। कैबिनेट से इस फैसले का प्रस्ताव पारित होने के बाद अब इस संबंध में पिछले सप्ताह विस्तृत आदेश जारी कर दिया था। अपर मुख्य सचिव के आदेश के बाद जिलाधिकारी रविंद्र कुमार मांदड़ ने मुख्य विकास अधिकारी नंद किशोर कलाल की अध्यक्षता में कमेटी गठित की थी, जिसके बाद जिला विद्यालय निरीक्षक मुन्ने अली ने जौहर शोध संस्थान के प्रबंधक को दो नंबबर को नोटिस भी जारी कर दिया था।नोटिस में सात दिन का समय दिया गया था। नोटिस की अवधि बृहस्पतिवार को पूरी हो गई। बृहस्पतिवार की दोपहर जिला विद्यालय निरीक्षक मुन्ने अली और जिला बेसिक शिक्षाधिकारी संजीव कुमार स्कूल पहुंचे, जहां वह करीब घंटे भर तक स्कूल में रहे। इस दौरान उन्होंने रामपुर पब्लिक स्कूल की शिफ्टिंग के काम का जायजा लिया। नोटिस की अवधि पूरी हो जाने के बाद अब प्रशासन किसी भी वक्त स्कूल की बिल्डिंग पर अपना ताला लगा सकता है।

यतीमखाना बस्ती में निर्माणाधीन भवन में सामान हो रहा शिफ्ट

" जौहर शोध संस्थान को नोटिस मिलने के बाद रामपुर पब्लिक स्कूल से सामान को शिफ्ट करना शुरू कर दिया है। यहां पर फिलहाल स्कूल का सामान यतीमखाना बस्ती में स्थित निर्माणधीन स्कूल भवन में रखा जा रहा है। इस जमीन पर माध्यमिक शिक्षा विभाग का कब्जा उसी दिन से है जिस दिन कैबिनेट की बैठक में जौहर ट्रस्ट की लीज निरस्त की गई थी। प्रशासन ने बिल्डिंग को खाली करने के लिए जो मोहलत थी उसकी समय सीमा समाप्त हो चुकी है। अब माध्यमिक शिक्षा विभाग किसी भी समय अपना ताला लगा सकता है। कैबिनेट के फैसले में जितनी जमीन शामिल है उसे खाली कराया जाएगा। इस जमीन पर जो भी निर्माण था या बाद में कराया गया है वह सरकारी हो चुका है। इसके अलावा जो लोग दावा कर रहे हैं उनके पास कोई कागज है तो दिखाएं। -आन्जनेय कुमार सिंह, कमिश्नर

ये है मामला

सपा सरकार में आजम खां के मौलाना मोहम्मद अली जौहर ट्रस्ट को शिक्षा विभाग की 41181 वर्ग फुट जमीन 30 साल की लीज पर दी गई थी, जिसके बाद यहां से जिला विद्यालय निरीक्षक के दफ्तर को खाली कराया गया था और फिर इस भवन में ट्रस्ट की ओर से रामपुर पब्लिक स्कूल का संचालन किया जाने लगा। भाजपा विधायक आकाश सक्सेना ने इस मुद्दे को उठाया था। साथ ही शासन से भी इस मामले की शिकायत की थी, जिसके बाद शासन से लेकर प्रशासन तक एक्टिव हो गया था। डीएम की रिपोर्ट के बाद शासन ने दो दिन पहले कैबिनेट की बैठक में इस जमीन को वापस लेने का फैसला लिया था।

2024 में फिर बड़े जनादेश से करूंगी वापसी : महुआ मोइत्रा

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नई दिल्ली। टीएमसी सांसद महुआ मोइत्रा और भाजपा सांसद नीशिकांत दुबे के बीच विवाद अब तक नहीं थम सका है। इस बीच, लोकसभा आचार समिति द्वारा कैश-फॉर-क्वेरी मामले में उन्हें सदन से निष्कासित करने की सिफारिश के एक दिन बाद शुक्रवार को तृणमूल कांग्रेस सांसद महुआ मोइत्रा ने कहा कि वह 2024 में बड़े जनादेश के साथ वापस आएंगी।

» एथिक्स कमेटी पर बरसीं टीएमसी सांसद

एक्स पर एक पोस्ट में टीएमसी सांसद ने कहा, संसदीय इतिहास में एथिक्स कॉम द्वारा अनैतिक रूप से निष्कासित होने वाले पहले व्यक्ति के रूप में जाने पर गर्व है, जिसके जनादेश में निष्कासन शामिल नहीं है। पहले निष्कासित करें और फिर सरकार से कहें कि वह सीबीआई से सबूत ढूंढने को कहे। कंगारू कोर्ट, शुरू से अंत तक बंदरबांट। महुआ मोइत्रा ने एक और ट्वीट करते हुए लिखा, साथ ही अडानी जी-हर किसी को महुआ का टिकट कट जाएगा कहकर अपना समय बर्बाद न करें। जैसे-जैसे आपके ताश के पत्तों का घर खुलता जाएगा, केवल एक चीज जो कट जाएगी, वह है आपका बाजार पूंजीकरण। जैसा कि मैंने कहा कि मैं कृष्णानगर से खड़ी होऊंगी और अपना मार्जिन दोगुना करके वापस आऊंगी। आचार समिति ने गुरुवार को मोइत्रा के निष्कासन की सिफारिश की, जिसमें एक पखवाड़े की कार्रवाई को सीमित कर दिया गया जिसमें तीन बैठकों में तीन लोगों की गवाही शामिल थी।

मां-बहनों के स्वास्थ्य को बेहतर करने की योजना : योगी

सीएम ने नि:शुल्क रसोई गैस सिलेंडर रिफिल वितरण अभियान का किया शुभारंभ

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। लोकभवन में प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना के तहत उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा 2,312 करोड़ के व्यय से प्रदेश के 1.75 करोड़ पात्र परिवारों को नि:शुल्क रसोई गैस सिलेंडर रिफिल वितरण अभियान का मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने शुभारंभ किया। इस अवसर पर सीएम योगी ने कहा कि लोक कल्याण संकल्प पत्र के एक संकल्प को पूरा करने का आज शुभारंभ किया गया है।

2016 में देश में रसोई गैस की किल्लत समाप्त करने के लिए बलिया में प्रधानमंत्री उज्ज्वला योजना शुरू की थी। उज्ज्वला योजना समय पर स्वस्थ ईंधन उपलब्ध कराने की योजना ही नहीं थी, बल्कि मां, बहनों के स्वास्थ्य को बेहतर करने की भी योजना है। फेफड़े कमजोर हो तो तमाम दिक्कतें आती हैं। कमजोर फेफड़े वाले वाले कोरोना काल में काल कवलित हो गए।

उन्होंने कहा कि 2016 में उज्ज्वला योजना न आई होती तो कितने लोग कोरोना में चले जाते। नौ करोड़ साठ लाख लोगों को इस योजना से जोड़ा गया। तीन सौ रुपए की सब्सिडी प्रधानमंत्री मोदी ने दी। 2014 से पहले 25-30 हजार रुपये खर्च करके गैस कनेक्शन मिलता था। तब त्योहारों पर सिलेंडर नहीं मिल पाता था। तब पुरुषों को लाइन में पुलिस की लाठी मिलती थी। बिना सिलेंडर घर पहुंचने पर बेलन मिलता था।

हिंदू खतरे में हैं मामले में याचिका खारिज, याचिकाकर्ता को फटकार

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

सुप्रीम कोर्ट ने सुनवाई से किया इनकार

नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट ने शुक्रवार को उस याचिका पर विचार करने से इनकार कर दिया, जिसमें भारत में हिंदू धर्म की सुरक्षा के लिए दिशानिर्देश बनाने के लिए केंद्र को निर्देश देने की मांग की गई थी। न्यायमूर्ति संजय किशन कौल की अध्यक्षता वाली पीठ ने कहा कि शीर्ष अदालत इस तरह की प्रार्थना वाली याचिका पर विचार करने की इच्छुक नहीं है।

शीर्ष अदालत ने उस याचिका में की गई प्रार्थना का जिक्र किया, जिसमें भारत सरकार के अधिकारियों को यहां हिंदू धर्म की सुरक्षा के लिए दिशानिर्देश बनाने का निर्देश देने की मांग की गई थी। पीठ ने कहा, कोई कहेगा कि भारत में इस्लाम की रक्षा करो। कोई कहेगा कि भारत में ईसाई धर्म की रक्षा करो। सुप्रीम कोर्ट उत्तर प्रदेश स्थित एक व्यक्ति द्वारा दायर याचिका पर सुनवाई कर रहा था। कोर्ट में बहस करने के लिए याचिकाकर्ता व्यक्तिगत रूप से उपस्थित हुआ था। जब याचिकाकर्ता ने शैक्षिक पाठ्यक्रम का हवाला दिया, तो पीठ ने कहा कि पाठ्यक्रम निर्धारित करना सरकार का काम है। पीठ ने कहा कि याचिकाकर्ता यह नहीं कह सकता कि वह जो चाहता है वह दूसरों को करना चाहिए। शीर्ष अदालत ने याचिका खारिज करते हुए कहा, आपने कुछ किया, आपने कुछ बनाया, आप इसका प्रचार कर सकते हैं। आपको कोई नहीं रोक रहा है। लेकिन आप यह नहीं कह सकते कि हर किसी को ऐसा करना चाहिए।

स्वामी 4 पीएम न्यूज नेटवर्क्स प्राइवेट लिमिटेड के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक **संजय शर्मा** द्वारा आस्था प्रिंटर्स, 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से मुद्रित एवं 5/600, विकास खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010 (यूपी) से प्रकाशित। **संपादक** - संजय शर्मा, **विधि सलाहकार:** सत्यप्रकाश श्रीवास्तव, मोहम्मद हैदर, **वित्तीय सलाहकार:** संदीप बंसल, **कार्टूनिस्ट:** हसन जैदी, **दूरभाष:** 0522- 4078371 | **Email:** daily4pm@gmail.com | **website:** www.4pm.co.in |
RNI-UPHIN/2015/62233 डाक पंजी. सं- SSP/LW/NP-495/2018-2020 *इस अंक में प्रकाशित समस्त समाचारों के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट के अंतर्गत उत्तरदायी। समस्त विवाद लखनऊ न्यायालय के अधीन ही होंगे।